※ राग मारू

कह्यौ तब हनुमत सौं रघुराई।
दौनागिरि पर आहि सँजीवनि, बैद[1] सुषेन बताई।
तुरत जाइ लै आउ उहाँ तैं, बिलँब न करि मो भाई।
सूरदास प्रभु-बचन सुनतहीं, हनुमत चल्यौ अतुराई ॥१४९॥

॥ ५६३ ॥

⊛ राग मारू

दौनागिरि हनुमान सिधायौ।
संजीवनि कौ भेद न पायौ, तब सब सैल उठायौ।
चितै रह्यौ तब भरत देखि कै, अवधपुरी जब आयौ।
|| मन मैं जानि उपद्रव भारी, बान अकास चलायौ।
|| राम-राम यह कहत पवन-सुत, भरत निकट तब आयौ।
पूछ्यौ सूर कौन है कहि तू, हनुमत नाम सुनायौ ॥१५०॥

॥ ५६४ ॥

× राग मारू

कहौ कपि रघुपति कौ संदेस।
कुसल बंधु लछिमन, बैदेही, श्रीपति सकल-नरेस।
जनि पूछौ तुम कुसल नाथ की, सुनौ भरत बलबीर।
बिलख-बदन, दुख भरे[2] सिया के, हैं जलनिधि कैं तीर।

---

* (ना) बिहागरौ।
① सुषेन चेति—२, १८, १६। मृतक जियत सो पाई—६, ८।
⊛ (ना) बिहागरौ।
|| ये दो चरण (का) में नहीं हैं।
× (ना) भैरौ।
② धरे सिया को—१।

※ राग मारू

कह्यौ तब हनुमत सौं रघुराई।
दौनागिरि पर आहि सँजीवनि, बैद[1] सुषेन बताई।
तुरत जाइ लै आउ उहाँ तैं, बिलँब न करि मो भाई।
सूरदास प्रभु-बचन सुनतहीं, हनुमत चल्यौ अतुराई ॥१४९॥

॥ ५६३ ॥

⊛ राग मारू

दौनागिरि हनुमान सिधायौ।
संजीवनि कौ भेद न पायौ, तब सब सैल उठायौ।
चितै रह्यौ तब भरत देखि कै, अवधपुरी जब आयौ।
|| मन मैं जानि उपद्रव भारी, बान अकास चलायौ।
|| राम-राम यह कहत पवन-सुत, भरत निकट तब आयौ।
पूछ्यौ सूर कौन है कहि तू, हनुमत नाम सुनायौ ॥१५०॥

॥ ५६४ ॥

× राग मारू

कहौ कपि रघुपति कौ संदेस।
कुसल बंधु लछिमन, बैदेही, श्रीपति सकल-नरेस।
जनि पूछौ तुम कुसल नाथ की, सुनौ भरत बलबीर।
बिलख-बदन, दुख भरे[2] सिया के, हैं जलनिधि कैं तीर।

---

* (ना) बिहागरौ।
(१) सुषेन चेति—२, १८, मृतक जियत सो पाई—६, ८।
⊛ (ना) बिहागरौ।
|| ये दो चरण (का) में नहीं हैं।
× (ना) भैरौ।
(२) धरे सिया को—१।

* राग मारू

† सुनौ कपि, कौसिल्या की बात ।
इहिँ पुर जनि आवहिँ[1] मम बत्सल, बिनु लछिमन लघु भ्रात ।
छाँड़्यौ[2] राज-काज, माता-हित, तुव[3] चरननि चित लाइ ।
ताहि[4] बिमुख जीवन धिक रघुपति, कहियौ कपि समुझाइ ।
लछिमन सहित कुसल[5] बैदेही, आनि राज पुर कीजै ।
नातरु सूर सुमित्रा-सुत पर वारि अपुनपौ दीजै ॥ १५३ ॥
॥ ५६७ ॥

राग मारू

‡ बिनती कहियौ जाइ पवनसुत, तुम रघुपति के आगे ।
या पुर जनि आवहु बिनु लछिमन, जननी-लाजनि-लागे ।
मारुतसुतहिँ सँदेस सुमित्रा ऐसैँ कहि समुझावै ।
सेवक जूझि परै रन भीतर, ठाकुर तउ घर आवै ।
जब तैँ तुम गवने कानन कौँ, भरत भोग सब छाँड़े ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, दुख-समूह उर गाड़े ॥ १५४ ॥
॥ ५६८ ॥

⊛ राग मारू

§ पवन-पुत्र बोल्यौ सतिभाइ ।
जानि सिराति राति बातनि मैँ, सुनौ भरत, चित लाइ ।

---

* (ना) नट ।

† यह पद (स, ल, रा) में नहीं है ।

(१) आवहु बिन लछमन सुनो [illegible] (तात)—१, ११ ।

(२) जिन तज्यौ—१, ६, ८, ११ ।

(३) तुम चरननि चित मानै—१, ६, ८, ११ ।

(४) कहा कहीं कछु कहत न आवै सज्जन होइ सु जानै—१, ६, ८, ११ ।

(५) सकल सेनापति—१, ६, ८, ११ ।

‡ यह पद (ना, स, ल, रा) में नहीं है ।

⊛ (ना) केदारा ।

§ यह पद अन्य प्रतियों में

* राग मारू

† सुनौ कपि, कौसिल्या की बात ।

इहिं पुर जनि आवहिं[1] मम बत्सल, बिनु लछिमन लघु भ्रात ।
छाँड़्यौ[2] राज-काज, माता-हित, तुव[3] चरननि चित लाइ ।
ताहि[4] बिमुख जीवन धिक रघुपति, कहियौ कपि समुझाइ ।
लछिमन सहित कुसल[5] बैदेही, आनि राज पुर कीजै ।
नातरु सूर सुमित्रा-सुत पर वारि अपुनपौ दीजै ॥ १५३ ॥

॥ ५६७ ॥

राग मारू

‡ बिनती कहियौ जाइ पवनसुत, तुम रघुपति के आगे ।
या पुर जनि आवहु बिनु लछिमन, जननी-लाजनि-लागे ।
मारुतसुतहिं सँदेस सुमित्रा ऐसैं कहि समुझावै ।
सेवक जूझि परै रन भीतर, ठाकुर तउ घर आवै ।
जब तैं तुम गवने कानन कौं, भरत भोग सब छाँड़े ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, दुख-समूह उर गाड़े ॥ १५४ ॥

॥ ५६८ ॥

⊛ राग मारू

§ पवन-पुत्र बोल्यौ सतिभाइ ।

जानि सिराति राति बातनि मैं, सुनौ भरत, चित लाइ ।

---

* (ना) नट ।

† यह पद (स, ल, रा) में नहीं है ।

(१) आवहु बिन लछमन सुनो बच्छ रघुनाथ (तात)—१, १६ ।

(२) जिन तज्यौ—१, ६, ८, १६ ।

(३) तुम चरननि चित मानै—१, ६, ८, १६ । (४) कहा कहीं कछु कहत न आवै सज्जन होइ सु जानै —१, ६, ८, १६ । (५) सकल सेनापति—१, ६, ८, १६ ।

‡ यह पद (ना, स, ल, रा) में नहीं है ।

⊛ (ना) केदारा ।

§ यह पद अन्य प्रतियों में

इमि दमि दुष्ट देव-द्विज मोचन, लंक बिभीषन, तुमकौं दैहौं।
लछिमन, सिया समेत सूर कपि, सब सुख सहित अजोध्या जैहौं ॥१५७॥

॥६०१॥

*राग मारू

आजु अति कोपे हैं रन राम।
ब्रह्मादिक आरूढ़ बिमाननि, देखत हैं संग्राम।
घन तन दिब्य कवच सजि करि अरु कर धारचौ सारंग।
सुचि करि सकल बान सूधे करि, कटि-तट कस्यौ निषंग।
सुरपुर तैं आयौ रथ सजि कै, रघुपति भए सवार।
काँपी भूमि कहा अब ह्वैहै, सुमिरत नाम मुरारि।
छोभित सिंधु, सेष-सिर कंपित, पवन भयौ गति पंग।
इंद्र हँस्यौ, हर[1] हिय बिलखान्यौ, जानि बचन कौ भंग।
धर-अंबर, दिसि-बिदिसि, बढ़े अति सायक किरन-समान।
मानौ महा-प्रलय के कारन, उदित उभय षट भान।
टूटत धुजा-पताक-छत्र - रथ, चाप - चक्र - सिरत्रान[2]।
जूझत[3] सुभट जरत ज्यौं दव द्रुम बिनु साखा बिनु पान।
स्रोनित छिंछ[4] उछरि आकासहिं, गज-बाजिनि-सिर लागि।
मानौ[5] निकरि तरनि रंध्रनि तैं, उपजी है अति आगि।

---

* (ना) धनाश्री।

(१) हर हँसि—१, १८, १६। ब्रह्मा—६, ८। (२) अमि त्रान—२। सर त्रान—६, ८, १६।

(३) सोभित—२। (४) छिछ (छित) उछरति अकास लौं—२, १८। छींट—१६। (५) मनौ नगर रन तननि धरनि तैं—१। मानौ निकरति रन रनधीरन—२। मानौ निकरत रन अहार ते—३।

इमि दमि दुष्ट देव-द्विज मोचन, लंक बिभीषन, तुमकौं दैहौं।
लछिमन, सिया समेत सूर कपि, सब सुख सहित अजोध्या जैहौं ॥१५७॥

॥६०१॥

* राग मारू

आजु अति कोपे हैं रन राम।
ब्रह्मादिक आरूढ़ बिमाननि, देखत हैं संग्राम।
घन तन दिब्य कवच सजि करि अरु कर धारयौ सारंग।
सुचि करि सकल बान सूधे करि, कटि-तट कस्यौ निषंग।
सुरपुर तैं आयौ रथ सजि कै, रघुपति भए सवार।
काँपी भूमि कहा अब ह्वैहै, सुमिरत नाम मुरारि।
छोभित सिंधु, सेष-सिर कंपित, पवन भयौ गति पंग।
इंद्र हँस्यौ, हर[1] हिय बिलखान्यौ, जानि बचन कौ भंग।
धर-अंबर, दिसि-बिदिसि, बढ़े अति सायक किरन-समान।
मानौ महा-प्रलय के कारन, उदित उभय षट भान।
टूटत धुजा-पताक-छत्र - रथ, चाप - चक्र - सिरत्रान[2]।
जूझत[3] सुभट जरत ज्यौं दव द्रुम बिनु साखा बिनु पान।
स्रोनित छिंछ[4] उछरि आकासहिँ, गज-बाजिनि-सिर लागि।
मानौ[5] निकरि तरनि रंध्रनि तैं, उपजी है अति आगि।

---

* (ना) धनाश्री।

(१) हर हँसि—१, १८, १९। ब्रह्मा—६, ८। (२) असि त्रान—२। सर त्रान—६, ८, १९।

(३) सोभित—३। (४) छिछ (छित) उछरति अकास लौं—२, १८। छींट—१६। (५) मनौ नगर रन तननि धरनि तैं—१। मानौ निकरति रन रनधीरन—२। मानौ निकरत रन अहार ते—३।

सिर सँभारि लै गयौ उमापति, रह्यौ रुधिर कौ गारौ।
दियौ बिभीषन राज सूर प्रभु, कियौ सुरनि निस्तारौ॥ १५६ ॥
॥ ६०३ ॥

* राग मारू

करुना करति मँदोदरि रानी।
चौदह सहस सुंदरी उमहीँ[1], उठै न कंत महा अभिमानी।
बार-बार बरज्यौ, नहिँ मान्यौ, जनक-सुता तैँ कत घर आनी।
ये जगदीस ईस कमलापति, सीता तिय करि तैँ कत जानी?
लीन्हे गोद बिभीषन रोवत, कुल कलंक ऐसी मति ठानी।
चोरी करी, राजहूँ खोयौ, अल्प मृत्यु तव आइ तुलानी।
कुंभकरन समुझाइ रहे पचि, दै सीता, मिलि सारँगपानी।
सूर सबनि कौ कह्यौ न मान्यौ, त्यौँ[2] खोई अपनी रजधानी॥१६०॥
॥६०४॥

⊛ राग मारू

लछिमन सीता देखी जाइ।
अति कृस, दीन, छीन-तन प्रभु बिनु, नैननि नीर बहाइ[3]।
जामवंत - सुग्रीव - बिभीषन करी दंडवत आइ।
आभूषन बहुमोल पटंबर, पहिरौ मातु बनाइ।
बिनु रघुनाथ मोहिँ सब फीके, आज्ञा मेटि न जाइ।
पुहुप बिमान बैठी बैदेही, त्रिजटी सब पहिराइ।

---

* (ना) गूजरी।
(1) ऊमी—१, ६, १६। ठाढ़ी—२। (2) तौ—२, ३, ६, ८, १६।
⊛ (ना) सारंग।
(3) भराइ—६, ८।

सिर सँभारि लै गयौ उमापति, रह्यौ रुधिर कौ गारौ ।
दियौ बिभीषन राज सूर प्रभु, कियौ सुरनि निस्तारौ ॥ १५६ ॥
॥ ६०३ ॥

* राग मारू

करुना करति मँदोदरि रानी ।
चौदह सहस सुंदरी उमहीं[1], उठै न कंत महा अभिमानी ।
बार-बार बरज्यौ, नहिं मान्यौ, जनक-सुता तैं कत घर आनी ।
ये जगदीस ईस कमलापति, सीता तिय करि तैं कत जानी ?
लीन्हे गोद बिभीषन रोवत, कुल कलंक ऐसी मति ठानी ।
चोरी करी, राजहूँ खोयौ, अल्प मृत्यु तव आइ तुलानी ।
कुंभकरन समुझाइ रहे पचि, दै सीता, मिलि सारँगपानी ।
सूर सबनि कौ कह्यौ न मान्यौ, त्यौं[2] खोई अपनी रजधानी ॥१६०॥
॥६०४॥

✿ राग मारू

लछिमन सीता देखी जाइ ।
अति कृस, दीन, छीन-तन प्रभु बिनु, नैननि नीर बहाइ[3] ।
जामवंत - सुग्रीव - बिभीषन करी दंडवत आइ ।
आभूषन बहुमोल पटंबर, पहिरौ मातु बनाइ ।
बिनु रघुनाथ मोहिं सब फीके, आज्ञा मेटि न जाइ ।
पुहुप बिमान बैठी बैदेही, त्रिजटी सब पहिराइ ।

---

* (ना) गूजरी ।
① ऊमी—१, ६, १६ । ठाढ़ी—२ ।
② तौ—२, ३, ६, ८, १६ ।
✿ (ना) सारंग ।
③ भराइ—६, ८ ।

राग सारंग

† बैठी जननि करति सगुनौती ।
लछिमन-राम मिलैं अब मोकौं, दोउ अमोलक मोती ।
इतनी कहत, सुकाग उहाँ तैं हरी डार उड़ि बैठ्यौ ।
अंचल गाँठि दई, दुख भाज्यौ, सुख जु आनि उर पैठ्यौ ।
जब लौं हौं जीवौं जीवन भर, सदा नाम तव जपिहौं ।
दधि-ओदन दोना भरि दैहौं, अरु भाइनि मैं थपिहौं ।
अब कैं जौ परचौ करि पावौं अरु देखौं भरि आँखि[1] ।
सूरदास सोने कैं पानी मढ़ौं -चोंच अरु पाँखि[2] ॥१६४॥
॥६०८॥

* राग मारू

हमारो जन्मभूमि यह गाउँ ।
सुनहु सखा सुग्रीव-बिभीषन, अवनि अजोध्या नाउँ ।
देखत बन-उपबन-सरिता-सर, परम मनोहर ठाउँ ।
अपनी प्रकृति लिए बोलत हौं, सुरपुर मैं न रहाउँ[3] ।
ह्याँ के बासी अवलोकत हौं, आनँद उर न समाउँ[4] ।
सूरदास जौ बिधि न सँकोचै, तौ बैकुंठ न जाउँ ॥ १६५ ॥
॥ ६०९ ॥

✿ राग बसंत

राघव आवत हैं अवध आज । रिपु जीते, साधे देव-काज ।
प्रभु कुसल बंधु-सीता समेत । जस सकल देस आनंद देत ।

---

† यह पद (ना, स, ल, रा) में नहीं है ।
(१) आँखी—१, १६, १९ ।
(२) पाँखी—१, १६, १९ ।
* (ना) धनाश्री ।
(३) समाउँ—२, ३ । (४) छवाउँ—२, ३ ।
✿ (ना) भैरो । (ना/३) मारू ।

राग सारंग

† बैठी जननि करति सगुनौती ।
लछिमन-राम मिलैं अब मोकौं, दोउ अमोलक मोती ।
इतनी कहत, सुकाग उहाँ तैं हरी डार उड़ि बैठ्यौ ।
अंचल गाँठि दई, दुख भाज्यौ, सुख जु आनि उर पैठ्यौ ।
जब लौं हौं जीवौं जीवन भर, सदा नाम तव जपिहौं ।
दधि-ओदन दोना भरि दैहौं, अरु भाइनि मैं थपिहौं ।
अब कैं जौ परचौ करि पावौं अरु देखौं भरि आँखि[1] ।
सूरदास सोने कैं पानी मढ़ौं -चोंच अरु पाँखि[2] ॥१६४॥
॥६०८॥

* राग मारू

हमारो जन्मभूमि यह गाउँ ।
सुनहु सखा सुग्रीव-बिभीषन, अवनि अजोध्या नाउँ ।
देखत बन-उपबन-सरिता-सर, परम मनोहर ठाउँ ।
अपनी प्रकृति लिए बोलत हौं, सुरपुर मैं न रहाउँ[3] ।
ह्याँ के बासी अवलोकत हौं, आनँद उर न समाउँ[4] ।
सूरदास जौ बिधि न सँकोचै, तौ बैकुंठ न जाउँ ॥ १६५ ॥
॥ ६०९ ॥

✿ राग बसंत

राघव आवत हैं अवध आज । रिपु जीते, साधे देव-काज ।
प्रभु कुसल बंधु-सीता समेत । जस सकल देस आनंद देत ।

---

† यह पद (ना, स, ल, रा) में नहीं है ।
(१) आँखी—१, १६, १९ ।
(२) पाँखी—१, १६, १९ ।
* (ना) धनाश्री ।
(३) समाउँ—२, ३ । (४) छवाउँ—२, ३ ।
✿ (ना) भैरो । (ना/३) मारू ।

ये बसिष्ठ कुल-इष्ट हमारे, पालागन कहि सखनि सिखावत।
ये स्वामी, सुग्रीव-बिभीषन, भरतहुँ तैं हमकौं जिय भावत।
रिपु-जय, देव-काज, सुख-संपति सकल सूर इनही तैं पावत।
ये अंगद हनुमान कृपानिधि पुर पैठत जिनकौ जस गावत ॥१६७॥

॥ ६११ ॥

राग मारू

देखौ कपिराज, भरत वै आए।

मम पाँवरी सीस पर जाकैं, कर-अँगुरी रघुनाथ बताए।
छीन सरीर बीर के बिछुरैं, राज-भोग चित तैं बिसराए।
तप[1] अरु लघु-दीरघता, सेवा, स्वामि-धर्म सब जगहिं सिखाए।
पुहुप विमान दूरिहीं छाँड़े, चपल चरन आवत प्रभु धाए।
आनँद-मगन पगनि[2] केकइ-सुत कनक-दंड ज्यौं[3] गिरत उठाए।
भेँटत आँसू परे पीठि पर, बिरह-अगिनि मनु जरत बुझाए।
ऐसेहिं मिले सुमित्रा-सुत कौं, गदगद गिरा नैन जल छाए।
जथाजोग भेँटे पुरबासी, गए सूल, सुख-सिंधु नहाए।
सिया-राम-लछिमन मुख निरखत, सूरदास के नैन सिराए ॥१६८॥

॥६१२॥

* राग मारू

अति सुख कौसिल्या उठि धाई।

उदित बदन मन[4] मुदित सदन तैं, आरति साजि सुमित्रा ल्याई।

(१) लघु दीरघ तपसा अरु सेवा—१, १९। (२) सदन सुत कैकयि—१, १९। दुहुनि के ऐसे—२, ३। दुहुनि को ऐसो—८। (३) मनो करहिं उठाए—२। * (ना) बिलावल। (४) अरु—१, २, ६, ८, १६, १८, १९।

ये बसिष्ट कुल-इष्ट हमारे, पालागन कहि सखनि सिखावत।
ये स्वामी, सुग्रीव-बिभीषन, भरतहुँ तैं हमकौं जिय भावत।
रिपु-जय, देव-काज, सुख-संपति सकल सूर इनही तैं पावत।
ये अंगद हनुमान कृपानिधि पुर पैठत जिनकौ जस गावत ॥१६७॥
॥ ६११ ॥

राग मारू

देखौ कपिराज, भरत वै आए।

सम पाँवरी सीस पर जाकैं, कर-अँगुरी रघुनाथ बताए।
छीन सरीर बीर के बिछुरैं, राज-भोग चित तैं बिसराए।
तप[1] अरु लघु-दीरघता, सेवा, स्वामि-धर्म सब जगहिं सिखाए।
पुहुप बिमान दूरिहीं छाँड़े, चपल चरन आवत प्रभु धाए।
आनँद-मगन पगनि[2] केकइ-सुत कनक-दंड ज्यौं[3] गिरत उठाए।
भेंटत आँसू परे पीठि पर, बिरह-अगिनि मनु जरत बुझाए।
ऐसेहिं मिले सुमित्रा-सुत कौं, गदगद गिरा नैन जल छाए।
जथाजोग भेंटे पुरबासी, गए सूल, सुख-सिंधु नहाए।
सिया-राम-लछिमन मुख निरखत, सूरदास के नैन सिराए ॥१६८॥
॥६१२॥

* राग मारू

अति सुख कौसिल्या उठि धाई।
उदित बदन मन[4] मुदित सदन तैं, आरति साजि सुमित्रा ल्याई।

---

(१) लघु दीरघ तपसा अरु सेवा—१, १६। (२) सदन सुत कैकयि—१, १६। दुहुनि के ऐसे—२, ३। दुहुनि को ऐसो—८। (३) मनो करहिँ उठाए—२। (४) अरु—१, २, ६, ८, १६, १८, १९।
* (ना) बिलावल।

* राग मारू

मनिमय आसन आनि धरे।
दधि-मधु-नीर कनक के कोपर आपुन[1] भरत भरे।
प्रथम भरत बैठाइ बंधु कौं, यह कहि पाइ परे।
हौं[2] पावौं प्रभु-पाइ पखारन, रुचि करि सो पकरे।
निज कर चरन पखारि प्रेम-रस आनँद-आँसु ढरे।
जनु[3] सीतल सौं तप्त सलिल दै, सुखित समोइ करे।
परसत पानि-चरन-पावन, दुख अँग-अँग सकल हरे।
सूर सहित आमोद[4] चरन-जल लै करि सीस धरे ॥१७१॥
॥६१५॥

❁ राग आसावरी

बिनती किहिँ बिधि प्रभुहिँ सुनाऊँ ?
महाराज रघुबीर धीर कौं, समय न कबहूँ पाऊँ !
जाम रहत जामिनि के बीतैं, तिहिँ औसर उठि धाऊँ।
सकुच होत सुकुमार नीँद मैं, कैसैं प्रभुहिँ जगाऊँ।
दिनकर-किरनि-उदित, ब्रह्मादिक-रुद्रादिक इक ठाऊँ।
अगनित भीर अमर-मुनि[5] गन की, तिहिँ तैं ठौर न पाऊँ।
उठत सभा दिन मधि[6], सैनापति-भीर देखि, फिरि आऊँ।
न्हात-खात सुख करत साहिबी, कैसैं करि अनखाऊँ।

---

* (ना) सूहो बिलावल।

(१) आने—३, ६, ८। (२) हौं पावन प्रभु चरन पखारौं—१, २, १६। (३) ज्यौं सीतल संताप सलिल दै सुद्धि (सुखद) समूह करे—१, १६। (४) पुर लोग—१६।

❁ (ना) अहीरी। (ना) मारू।

(५) मँगतन की—२। (६) मध्य सिया पति देखि भीर—१।

* राग मारू

मनिमय आसन आनि धरे।
दधि-मधु-नीर कनक के कोपर आपुन[1] भरत भरे।
प्रथम भरत बैठाइ बंधु कौं, यह कहि पाइ परे।
हौं[2] पावौं प्रभु-पाइ पखारन, रुचि करि सो पकरे।
निज कर चरन पखारि प्रेम-रस आनँद-आँसु ढरे।
जनु[3] सीतल सौं तप्त सलिल दै, सुखित समोइ करे।
परसत पानि-चरन-पावन, दुख अँग-अँग सकल हरे।
सूर सहित आमोद[4] चरन-जल लै करि सीस धरे॥१७१॥
॥६१५॥

❁ राग आसावरी

बिनती किहिँ बिधि प्रभुहिँ सुनाऊँ ?
महाराज रघुबीर धीर कौं, समय न कबहूँ पाऊँ !
जाम रहत जामिनि के बीतैँ, तिहिँ औसर उठि धाऊँ।
सकुच होत सुकुमार नीँद मैँ, कैसैँ प्रभुहिँ जगाऊँ।
दिनकर-किरनि-उदित, ब्रह्मादिक-रुद्रादिक इक ठाऊँ।
अगनित भीर अमर-मुनि[5] गन की, तिहिँ तैँ ठौर न पाऊँ।
उठत सभा दिन मधि[6], सैनापति-भीर देखि, फिरि आऊँ।
न्हात-खात सुख करत साहिबी, कैसैँ करि अनखाऊँ।

---

* (ना) सूहो बिलावल।

(१) आने—३, ६, ८। (२) हौं पावन प्रभु चरन पखारौं—१, २, १६। (३) ज्यौं सीतल संताप सलिल दै सुद्धि (सुखद) समूह करे—१, १६। (४) पुर लोग—१६।

❁ (ना) अहीरी। (ना) मारू।

(५) मँगतन की—२। (६) मध्य सिया पति देखि भीर—१।

जौ यह संजीवनि पढ़ि जाइ। तौ हम-सत्रुनि लेइ जिवाइ।
यह बिचार करि कच कौं मारयौ। सुक्र-सुता दिन पंथ निहारयौ।
साँझ भएँहूँ जब नहिँ आयौ। सुक्र पास तिनि जाइ सुनायौ।
सुक्र हृदय मैं कियौ बिचार। कह्यौ असुरनि उहिँ डारयौ मार।
सुता कह्यौ तिहिँ फेरि जिवावौ। मेरे जिय कौ सोच मिटावौ।
सुक्र ताहि पढ़ि मंत्र जिवायौ। भयौ तासु तनया कौ भायौ।
पुनि हति मदिरा माहिँ मिलाइ। दियौ दानवनि रिषिहिँ पियाइ।
तब तैं हत्या मद कौं लागी। यहै जानि सब सुर[1]-मुनि त्यागी।
साप दियौ ताकौं इहिँ भाइ। जो तोहिँ पियै सो नरकहिँ जाइ।
कच बिनु सुक्र-सुता दुख पायौ। तब रिषि तासौं कहि समुझायौ।
मारयौ कच कौं असुरनि धाइ। मदिरा मैं मोहिँ दियौ पियाइ।
ताहि जिवाऊँ तौ मैं मरौं। जो तुम कहौ सो अब मैं करौं।
कह्यौ बिनय करि सुनु रिषिराइ। दोउ जीवैं सो करौ उपाइ।
संजीवनि तब कचहिँ पढ़ाई। तासौं पुनि यौं कह्यौ बुझाई।
जब तुम निकसि उदर तैं आवहु। या विद्या करि मोहिँ जिवावहु।
उदर फारि तिहिँ बाहर कियौ। मिरतक कच ऐसी बिधि जियौ।
सो जब उदर तैं बाहर आयौ। संजीवनि पढ़ि सुक्र जिवायौ।
बहुतक काल बीति जब गयौ। कच रिषि रिषि-तनया सौं कह्यौ।
अब मैं तुम्हरी आज्ञा पाइ। तात-मातु कौं देखौं जाइ।

(१) देवनि—१,१६। रिषिन तियागी—२, ३।

जौ यह संजीवनि पढ़ि जाइ। तौ हम-सत्रुनि लेइ जिवाइ।
यह बिचार करि कच कौं मारयौ। सुक्र-सुता दिन पंथ निहारयौ।
साँझ भऍहूँ जब नहिँ आयौ। सुक्र पास तिनि जाइ सुनायौ।
सुक्र हृदय मैँ कियौ बिचार। कह्यौ असुरनि उहिँ डारयौ मार।
सुता कह्यौ तिहिँ फेरि जिवावौ। मेरे जिय कौ सोच मिटावौ।
सुक्र ताहि पढ़ि मंत्र जिवायौ। भयौ तासु तनया कौ भायौ।
पुनि हति मदिरा माहिँ मिलाइ। दियौ दानवनि रिषिहिँ पियाइ।
तब तैँ हत्या मद कौँ लागी। यहै जानि सब सुर[1]-मुनि त्यागी।
साप दियौ ताकौँ इहिँ भाइ। जो तोहिँ पियै सो नरकहिँ जाइ।
कच बिनु सुक्र-सुता दुख पायौ। तब रिषि तासौँ कहि समुझायौ।
मारयौ कच कौँ असुरनि धाइ। मदिरा मैँ मोहिँ दियौ पियाइ।
ताहि जिवाऊँ तौ मैँ मरौँ। जो तुम कहौ सो अब मैँ करौँ।
कह्यौ बिनय करि सुनु रिषिराइ। दोउ जीवैँ सो करौ उपाइ।
संजीवनि तब कचहिँ पढ़ाई। तासौँ पुनि यौँ कह्यौ बुझाई।
जब तुम निकसि उदर तैँ आवहु। या विद्या करि मोहिँ जिवावहु।
उदर फारि तिहिँ बाहर कियौ। मिरतक कच ऐसी बिधि जियौ।
सो जब उदर तैँ बाहर आयौ। संजीवनि पढ़ि सुक्र जिवायौ।
बहुतक काल बीति जब गयौ। कच रिषि रिषि-तनया सौँ कह्यौ।
अब मैँ तुम्हरी आज्ञा पाइ। तात-मातु कौँ देखौँ जाइ।

---

(१) देवनि—१,१६। रिषिन तियागी—२, ३।

नृपति जजाति अचानक आयौ । सुक्र-सुता कौ दरसन पायौ ।
दियौ तब बसन आपनौ डारि । हाथ पकरि कै लियौ निकारि ।
बहुरि नृपति निज गेह सिधायौ । सुता सुक्र सौं जाइ सुनायौ ।
सुक्र क्रोध करि नगरहिं त्याग्यौ । असुर नृपति सुनि रिषि-सँग लाग्यौ ।
जब बहु भाँति बिनय नृप करी । तब रिषि यह बानी उच्चरी ।
मम कन्या प्रसन्न ज्यौं होइ । करौ असुर-पति अब तुम सोइ ।
सुक्र-सुता सौं कह्यौ तिन आइ । आज्ञा होइ सो करौं उपाइ ।
जो तुम कहौ करौं अब सोइ । तव पुत्री मम दासी होइ ।
नृप पुत्री दासी करि ठई । दासी सहस ताहि सँग दई ।
सो सब ताकी सेवा करैं । दासी भाव हृदय मैं धरैं ।
इक दिन सुक्र-सुता मन आई । देखौं जाइ फूल फुलवाई ।
लै दासिनि फुलवारी गई । पुहुप-सेज रचि सोवत भई ।
असुर-सुता तिहिं ब्यजन डुलावै । सोवत सेज सो अति सुख पावै ।
तिहिं अवसर जजाति नृप आयौ । सुक्र-सुता तिहिं बचन सुनायौ ।
नृप मम पानि-ग्रहन तुम करौ । सुक्र-सँकोच हृदय मति धरौ ।
कच कौं प्रथम दियौ मैं साप । उनहूँ मोहिं दियौ करि दाप ।
ताकौं[1] कोउ न सकै मिटाइ । तातैं ब्याह करौ तुम राइ ।
नृप कह्यौ, कहौ सुक्र सौं जाइ । करिहौं जो कहिहैं रिषिराइ ।
तब तिनि कह्यौ सुक्र सौं जाइ । कियौ ब्याह रिषि नृपति बुलाइ ।
असुर-सुता ताकैं सँग दई । दासी सहस ताहि सँग भईं ।

---

(१) ब्राह्मन वर मोहिं मिलै न राइ—१६ ।

नृपति जजाति अचानक आयौ। सुक्र-सुता कौ दरसन पायौ।
दियौ तब बसन आपनौ डारि। हाथ पकरि कै लियौ निकारि।
बहुरि नृपति निज गेह सिधायौ। सुता सुक्र सौं जाइ सुनायौ।
सुक्र क्रोध करि नगरहिं त्याग्यौ। असुर नृपति सुनि रिषि-सँग लाग्यौ।
जब बहु भाँति बिनय नृप करी। तब रिषि यह बानी उच्चरी।
मम कन्या प्रसन्न ज्यौं होइ। करौ असुर-पति अब तुम सोइ।
सुक्र-सुता सौं कह्यौ तिन आइ। आज्ञा होइ सो करौं उपाइ।
जो तुम कहौ करौं अब सोइ। तव पुत्री मम दासी होइ।
नृप पुत्री दासी करि ठई। दासी सहस ताहि सँग दई।
सो सब ताकी सेवा करैं। दासी भाव हृदय मैं धरैं।
इक दिन सुक्र-सुता मन आई। देखौं जाइ फूल फुलवाई।
लै दासिनि फुलवारी गई। पुहुप-सेज रचि सोवत भई।
असुर-सुता तिहिं ब्यजन डुलावै। सोवत सेज सो अति सुख पावै।
तिहिं अवसर जजाति नृप आयौ। सुक्र-सुता तिहिं बचन सुनायौ।
नृप मम पानि-ग्रहन तुम करौ। सुक्र-सँकोच हृदय मति धरौ।
कच कौं प्रथम दियौ मैं साप। उनहूँ मोहिं दियौ करि दाप।
ताकौं[1] कोउ न सकै मिटाइ। तातैं ब्याह करौ तुम राइ।
नृप कह्यौ, कहौ सुक्र सौं जाइ। करिहौं जो कहिहैं रिषिराइ।
तब तिनि कह्यौ सुक्र सौं जाइ। कियौ ब्याह रिषि नृपति बुलाइ।
असुर-सुता ताकैं सँग दई। दासी सहस ताहि सँग भईं।

---

(१) ब्राह्मन वर मोहिं मिलै न राइ—१६।

लघु सुत नृपति-बुढ़ापौ लयौ । अपनौ तरुनापौ तिहिँ दयौ ।
बरष सहस्र भोग नृप किये । पै संतोष न आयौ हिये ।
कह्यौ, बिषय तैँ तृप्ति न होइ । भोग करौ कितनौ किन कोइ ।
तब तरुनापौ सुत कौँ दीन्हौ । बृद्धपनौ अपनौ फिरि लीन्हौ ।
बन मैँ करी तपस्या जाइ । रह्यौ हरि-चरननि सौँ चित लाइ ।
या बिधि नृपति कृतारथ भयौ । सो राजा मैँ तुमसौँ कह्यौ ।
सुक ज्यौँ नृप कौँ कहि समुझायौ । सूरदास त्यौँही कहि गायौ ॥१७४॥
॥ ६१८ ॥

लघु सुत नृपति-बुढ़ापौ लयौ। अपनौ तरुनापौ तिहिँ दयौ।
बरष सहस्र भोग नृप किये। पै संतोष न आयौ हिये।
कह्यौ, बिषय तैँ तृप्ति न होइ। भोग करौ कितनौ किन कोइ।
तब तरुनापौ सुत कौँ दीन्हौ। बृद्धपनौ अपनौ फिरि लीन्हौ।
बन मैँ करी तपस्या जाइ। रह्यौ हरि-चरननि सौँ चित लाइ।
या बिधि नृपति कृतारथ भयौ। सो राजा मैँ तुमसौँ कह्यौ।
सुक ज्यौँ नृप कौँ कहि समुझायौ। सूरदास त्यौँही कहि गायौ ॥१७४॥
॥ ६१८ ॥

† आदि सनातन, हरि अबिनासी। सदा निरंतर घट-घट-बासी।
पूरन ब्रह्म, पुरान बखानैं। चतुरानन, सिव[1], अंत न जानैं।
गुन[2]-गन अगम, निगम नहिँ पावै। ताहि जसोदा गोद खिलावै।
एक निरंतर ध्यावै ज्ञानी[3]। पुरुष पुरातन सो निर्बानी।
जप-तप-संजम-ध्यान न आवै। सोइ नंद कैँ आँगन धावै।
लोचन-स्रवन न रसना-नासा। बिनु[4] पद-पानि करै परगासा।
बिस्वंभर निज नाम कहावै। घर-घर गोरस सोइ चुरावै।
सुक-सारद से करत बिचारा। नारद से पावहिँ नहिँ पारा।
अबरन[5], बरन सुरति नहिँ धारै। गोपिनि के सो बदन निहारै।
जरा-मरन तैँ रहित, अमाया। मातु, पिता, सुत, बंधु न जाया।
ज्ञान-रूप हिरदै मैँ बोलै। सो बछरनि के पाछैँ डोलै।
जल, धर, अनिल, अनल, नभ, छाया। पंचतत्त्व तैँ[6] जग उपजाया।
माया प्रगटि सकल जग मोहै। कारन-करन करै सो सोहै।
सिव[7]-समाधि जिहि अंत न पावै। सोइ[8] गोप की गाइ चरावै।
अच्युत[9] रहै सदा जल-साई। परमानंद परम सुखदाई।
लोक रचै राखै अरु मारै। सो ग्वालनि सँग लीला धारै।

---

* (ना) विभास। (कां) सारग। (रा, श्या) आसावरी।

† भिन्न-भिन्न प्रतियों में इस पद के चरणों की संख्या तथा क्रम में बड़ा भेद है। यहाँ अधिकांश (वे, गो) के अनुसार क्रम तथा संख्या रक्खी गई है। कुछ प्रतियों में यह पद ब्रह्मा-स्तुति के अतर्गत पाया जाता है। परंतु (ना, स, का, कां, रा, श्या) में यह दशम स्कंध के आरभ में स्तुति रूप से रक्खा है। इसका दशम स्कध के आरंभ में ही होना विशेष संगत समझकर हमने भी इसको यहीं रक्खा है।

(१) हूँ—१४। (२) महिमा अगम निगम जिहिँ गावै—२, ३, ६, १६। (३) ध्यानी—१। (४) ना पद पानि न गुन परकासा—१। (५) अरुन असित (हरित) सित वरन न धारै—२, ३, ६, १६। (६) मिलि जगत उपायौ—१। (७) ब्रह्मादिक—१, १७। (८) सो गोकुल मे गाइ—१, १७। (९) आदि न अंत रहै सेप साईं—२, ३।

† आदि सनातन, हरि अबिनासी। सदा निरंतर घट-घट-बासी।
पूरन ब्रह्म, पुरान बखानैं। चतुरानन, सिव[1], अंत न जानैं।
गुन[2]-गन अगम, निगम नहिँ पावै। ताहि जसोदा गोद खिलावै।
एक निरंतर ध्यावै ज्ञानी[3]। पुरुष पुरातन सो निर्बानी।
जप-तप-संजम-ध्यान न आवै। सोइ नंद कैं आँगन धावै।
लोचन-स्रवन न रसना-नासा। बिनु[4] पद-पानि करै परगासा।
बिस्वंभर निज नाम कहावै। घर-घर गोरस सोइ चुरावै।
सुक-सारद से करत बिचारा। नारद से पावहिँ नहिँ पारा
अबरन[5], बरन सुरति नहिँ धारै। गोपिनि के सो बदन निहारै
जरा-मरन तैं रहित, अमाया। मातु, पिता, सुत, बंधु न जाया।
ज्ञान-रूप हिरदै मैं बोलै। सो बछरनि के पाछैं डोलै।
जल, धर, अनिल, अनल, नभ, छाया। पंचतत्त्व तैं[6] जग उपजाया।
माया प्रगटि सकल जग मोहै। कारन-करन करै सो सोहै।
सिव[7]-समाधि जिहि अंत न पावै। सोइ[8] गोप की गाइ चरावै।
अच्युत[9] रहै सदा जल-साई। परमानंद परम सुखदाई।
लोक रचै राखै अरु मारै। सो ग्वालनि सँग लीला धारै।

---

* (ना) बिभास। (कां) सारग। (रा, श्या) आसावरी।

† भिन्न-भिन्न प्रतियों में इस पद के चरणों की संख्या तथा क्रम में बड़ा भेद है। यहाँ अधिकांश (वे, गो) के अनुसार क्रम तथा संख्या रक्खी गई है। कुछ प्रतियों में यह पद ब्रह्मा-स्तुति के अंतर्गत पाया जाता है। परंतु (ना, स, का, कां, रा, श्या) में यह दशम स्कंध के आरंभ में स्तुति रूप से रक्खा है। इसका दशम स्कंध के आरंभ में ही होना विशेष संगत समझकर हमने भी इसको यहीं रक्खा है।

(१) हूँ—१४। (२) महिमा अगम निगम जिहिं गावै—२, ३, ६, १६। (३) ध्यानी—१। (४) ना पद पानि न गुन परकासा—१। (५) अरुन असित (हरित) सित बरन न धारै—२, ३, ६, १६। (६) मिलि जगत उपायौ—१। (७) ब्रह्मादिक—१, १७। (८) सो गोकुल मे गाइ—१, १७। (९) आदि न अंत रहै सेष साईं—२, १।

हय - गय - रतन - हेम - पाटंबर, आनँद - मंगलचारा।
समदत भई अनाहत बानी, कंस - कान भनकारा।
याकी कोखि औतरै जो सुत, करै प्रान - परिहारा।
रथ तैं उतरि, केस गहि राजा, कियौ खड्ग पटतारा।
तब बसुदेव दीन ह्वै भाष्यौ, पुरुष न तिय-बध करई।
मोकौं भई अनाहत बानी, तातैं सोच न टरई।
आगैं बृच्छ फरै जो बिष-फल, बृच्छ बिना किन सरई[1]।
याहि मारि, तोहिं और बिवाहौं, अग्र[2]-सोच क्यौं मरई!
यह[3] सुनि सकल देव-मुनि भाष्यौ, राय, न ऐसी कीजै।
तुम्हरे मान्य बसुदेव-देवकी, जीव-दान इहिं दीजै।
कीन्यौ जज्ञ होत है निष्फल, कह्यौ[4] हमारौ कीजै।
याकैं[5] गर्भ अवतरैं जे सुत, सावधान ह्वै लीजै।
पहिलौ पुत्र देवकी जायौ, लै बसुदेव दिखायौ।
बालक देखि कंस हँसि दीन्यौ, सब अपराध छमायौ।
कंस कहा लरिकाई कीनी, कहि नारद समुझायौ।
जाकौ[6] भरम करत हौ राजा, मति पहिलैं सो आयौ!
यह सुनि कंस पुत्र फिरि माँग्यौ[7], इहिं बिधि सबनि सँहारौ।
तब देवकी भई अति व्याकुल, कैसैं प्रान प्रहारौं।
कंस बंस कौ नास करत है, कहँ लौं जीव[8] उबारौं।
यह बिपदा कब मेटहिं श्रीपति, अरु हौं काहिं पुकारौं।

---

(१) सरियै—२, ३। (२) कौन सोच जिय जरियै—२, ३। कौन (कहा) सोच दुख जरई—६, १६। (३) बालक काज धर्म जिनि छाँड़ौ—१, ११, १४। (४) बेद भंग नहिं कीजै—१, ६, ११, १६। (५) याकी कोख औतरै जो सुत—२, ३, ६, १६। (६) जाकै डर तुम करत हौ अपडर—२, ३, १६, १८, १६। (७) मारयौ—१, १४। (८) धीरज धारौं—२।

हय - गय - रतन - हेम - पाटंबर, आनँद - मंगलचारा।
समदत भई अनाहत बानी, कंस - कान झनकारा।
याकी कोखि औतरै जो सुत, करै प्रान - परिहारा।
रथ तैं उतरि, केस गहि राजा, कियौ खड्ग पटतारा।
तब बसुदेव दीन ह्वै भाष्यौ, पुरुष न तिय-बध करई।
मोकौं भई अनाहत बानी, तातैं सोच न टरई।
आगैं बृच्छ फरै जो बिष-फल, बृच्छ बिना किन सरई[1]।
याहि मारि, तोहिं और बिवाहौं, अग्र[2]-सोच क्यौं मरई!
यह[3] सुनि सकल देव-मुनि भाष्यौ, राय, न ऐसी कीजै।
तुम्हरे मान्य बसुदेव-देवकी, जीव-दान इहिं दीजै।
कीन्यौ जज्ञ होत है निष्फल, कह्यौ[4] हमारौ कीजै।
याकैं[5] गर्भ अवतरैं जे सुत, सावधान ह्वै लीजै।
पहिलौ पुत्र देवकी जायौ, लै बसुदेव दिखायौ।
बालक देखि कंस हँसि दीन्यौ, सब अपराध छमायौ।
कंस कहा लरिकाई कीनी, कहि नारद समुझायौ।
जाकौं[6] भरम करत हौ राजा, मति पहिलैं सो आयौ!
यह सुनि कंस पुत्र फिरि माँग्यौ[7], इहिं बिधि सबनि सँहारौ।
तब देवकी भई अति व्याकुल, कैसैं प्रान प्रहारौं।
कंस बंस कौ नास करत है, कहँ लौं जीव[8] उबारौं।
यह बिपदा कब मेटहिं श्रीपति, अरु हौं काहिं पुकारौं।

(१) सरियै—२, ३। (२) कौन सोच जिय जरियै—२, ३। कौन (कहा) सोच दुख जरई—६, १६। (३) बालक काज धर्म जिनि छाँड़ौ—१, ११, १४। (४) बेद भंग नहिं कीजै—१, ६, ११, १६। (५) याकी कोख औतरै जो सुत—२, ३, ६, १६। (६) जाकै डर तुम करत हौ अपडर—२, ३, १६, १८, १९। (७) मारयौ—१, १४। (८) धीरज धारौं—२।

माथैं मुकुट, सुभग पीतांबर, उर सोभित भृगु-रेखा।
संख-चक्र-गदा-पद्म बिराजत, अति प्रताप सिसु-भेषा।
जननी निरखि भई तन ब्याकुल, यह न चरित कहुँ देखा।
बैठो सकुचि, निकट पति बोल्यौ, दुहुँनि पुत्र-मुख पेखा।
सुनि देवकि, इक आन जन्म की, तोकौं कथा सुनाऊँ।
तैं माँग्यौ, हौं दियौ कृपा करि, तुम सौ बालक पाऊँ।
सिव-सनकादि आदि ब्रह्मादिक ज्ञान ध्यान नहिं आऊँ।
भक्तबछल बानौ है मेरौ, बिरुदहिं कहा लजाऊँ।
यह कहि मया मोह अरुझाए, सिसु ह्वै रोवन लागे।
अहो बसुदेव, जाहु लै गोकुल, तुम हौ परम सभागे।
घन-दामिनि धरती लौं[1] कौंधै, जमुना-जल सौं पागे।
आगैं जाउँ जमुन-जल गहिरौ[2], पाछैं सिंह जु लागे।
लै बसुदेव धँसे दह सूधे, सकल[3] देव अनुरागे।
जानु, जंघ, कटि, ग्रीव, नासिका, तब[4] लियौ स्याम उछाँगे।
चरन पसारि परसी कालिंदी, तरवा नीर तियागे।
सेष सहस फन ऊपर छायौ, लै गोकुल कौं भागे।
पहुँचे जाइ महर-मंदिर मैं, मनहिं न संका कीनी।
देखी परी जोगमाया, बसुदेव गोद करि लीनी।
लै बसुदेव मधुपुरी पहुँचे प्रगट सकल पुर कीनी।

(१) मिलि गरजै महा कठिन दुख भारे—१, ६, १४। (२) बूड़ौं पाछे सिंह दहारे—१ ६, १४। (३) तिहूँ लोक उजियारे—१, ११, १४। (४) वसुदेव मनहिं विचारे—१, ११, १४।

माथैं मुकुट, सुभग पीतांबर, उर सोभित भृगु-रेखा।
संख-चक्र-गदा-पद्म बिराजत, अति प्रताप सिसु-भेषा।
जननी निरखि भई तन ब्याकुल, यह न चरित कहुँ देखा।
बैठो सकुचि, निकट पति बोल्यौ, दुहुँनि पुत्र-मुख पेखा।
सुनि देवकि, इक आन जन्म की, तोकौं कथा सुनाऊँ।
तैं माँग्यौ, हौं दियौ कृपा करि, तुम सौ बालक पाऊँ।
सिव-सनकादि आदि ब्रह्मादिक ज्ञान ध्यान नहिं आऊँ।
भक्तबछल बानौ है मेरौ, बिरुदहिं कहा लजाऊँ।
यह कहि मया मोह अरुझाए, सिसु ह्वै रोवन लागे।
अहो बसुदेव, जाहु लै गोकुल, तुम हौ परम सभागे।
घन-दामिनि धरती लौं[1] कौंधै, जमुना-जल सौं पागे।
आगैं जाउँ जमुन-जल गहिरौ[2], पाछैं सिंह जु लागे।
लै बसुदेव धँसे दह सूधे, सकल[3] देव अनुरागे।
जानु, जंघ, कटि, ग्रीव, नासिका, तब[4] लियौ स्याम उछाँगे।
चरन पसारि परसी कालिंदी, तरवा नीर तियागे।
सेष सहस फन ऊपर छायौ, लै गोकुल कौं भागे।
पहुँचे जाइ महर-मंदिर मैं, मनहिं न संका कीनी।
देखी परी जोगमाया, बसुदेव गोद करि लीनी।
लै बसुदेव मधुपुरी पहुँचे प्रगट सकल पुर कीनी।

---

(१) मिलि गरजै महा कठिन दुख भारे—१, ६, १४। (२) बूड़ौं पाछे सिंह दहारे—१६, १४। (३) तिहूँ लोक उजियारे—१, ११, १४। (४) वसुदेव मनहिं विचारे—१, ११, १४।

* राग बिलावल

† हरि-मुख देखि हो बसुदेव !

कोटि-काम-स्वरूप सुंदर[1], कोउ न जानत भेव।

चारि भुज जिहिँ चारि आयुध, निरखि कै[2] न पत्याउ !

अजहुँ मन परतीति नाहीँ नंद-घर लै जाउ[3]।

स्वान[4] सूते, पहरुवा सब, नीँद उपजी[5] गेह।

निसि अँधेरी, बीजु चमकै, सघन बरषै मेह।

बंदि बेरी सबै छूटी, खुले बज्र-कपाट।

सीस धरि श्रीकृष्न लीने, चले गोकुल-बाट।

सिंह-आगैँ, सेष पाछैँ, नदी भइ भरिपूरि।

नासिका लौँ नीर बाढ्यौ, पार पैलो दूरि।

सीस तैँ हुंकार कीनी, जमुन जान्यौ भेव।

चरन परसत थाह दीन्ही, पार गए बसुदेव।

महरि-ढिग उन जाइ राखे, अमर अति आनंद।

|| सूरदास बिलास ब्रज-हित, प्रगटे आनँद-कंद ॥ ५ ॥

॥६२३॥

---

* (ना, का, कां, रा) केदारा। (क) सोरठ।

† यह पद (के, पू) मेँ नहीँ है।

[1] बालक—३, ६, १४, १६, १९। [2] लै कर ताउ—१, ११, १५। लै नृप ताहि—३। [3] जाहि—३। [4] झरे तारे परे पहरू—३, ६, १४, १९। [5] आई—१४।

|| (ना, स, का, क, श्या) मेँ इस पद की समाप्ति यहीँ होती है; पर (वे, गो, जै, रा) मेँ चार चरण और हैँ जो प्रक्षिप्त प्रतीत होते है। वे इस संस्करण मेँ नहीँ दिए गए।

* राग बिलावल

† हरि-मुख देखि हो बसुदेव !
कोटि-काम-स्वरूप सुंदर[1], कोउ न जानत भेव।
चारि भुज जिहिँ चारि आयुध, निरखि कै[2] न पत्याउ !
अजहुँ मन परतीति नाहीँ नंद-घर लै जाउ[3]।
स्वान[4] सूते, पहरुवा सब, नीँद उपजी[5] गेह।
निसि अँधेरी, बीजु चमकै, सघन बरषै मेह।
बंदि बेरी सबै छूटी, खुले बज्र-कपाट।
सीस धरि श्रीकृष्न लीने, चले गोकुल-बाट।
सिंह-आगैँ, सेष पाछैँ, नदी भइ भरिपूरि।
नासिका लौँ नीर बाढ्यौ, पार पैलो दूरि।
सीस तैँ हुंकार कीनौ, जमुन जान्यौ भेव।
चरन परसत थाह दीन्ही, पार गए बसुदेव।
महरि-ढिग उन जाइ राखे, अमर अति आनंद।
|| सूरदास बिलास ब्रज-हित, प्रगटे आनँद-कंद ॥ ५ ॥

॥६२३॥

---

* (ना, का, काँ, रा) केदारा। (क) सोरठ।

† यह पद (के, पू) मेँ नहीँ है।

(१) बालक—३, ६, १४, १६, १९। (२) लै कर ताउ—९, ११, १५। लै नृप ताहि—३। (३) जाहि—३। (४) झरे तारे परे पहरू—३, ६, १४, १९। (५) आई—१४।

|| (ना, स, का, क, श्या) मेँ इस पद की समाप्ति यहीँ होती है; पर (वे, गो, जै, रा) मेँ चार चरण और हैँ जो प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं। वे इस संस्करण मेँ नहीँ दिए गए।

* राग बिहा[ग]

† देवकी मन-मन चकित भई ।
देखहु आइ पुत्र-मुख काहे न, ऐसी कहुँ देखी न दई ।
सिर पर मुकुट, पीत उपरैना, भृगु-पद उर, भुज चारि धरे ।
पूरब कथा सुनाइ कही हरि, तुम माँग्यौ इहिँ भेष करे ।
छोरे निगड़, सोआए पहरू, द्वारे कौ कपाट उघर्यौ ।
तुरत मोहिँ गोकुल पहुँचावहु, यह कहि कै सिसु बेष धर्यौ ।
तब बसुदेव उठे यह सुनतहिँ, हरषवंत नँद-भवन गए ।
बालक धरि, लै सुरदेवी कौं, आइ सूर मधुपुरी ठए ॥ ८ ॥
॥ ६२६ ॥

❀ राग केद[ारौ]

अहो पति सो उपाइ कछु कीजै ।
जिहिँ उपाइ[1] अपनौ यह बालक, राखि कंस सौं लीजै ।
मनसा, बाचा, कहत कर्मना, नृप कबहूँ न पतीजै ।
बुधि[2], बल, छल, कल, कैसेँहु करिकै, काढ़ि अनतहीँ दीजै ।
नाहिँन इतनौ भाग जो यह रस, नित लोचन-पुट पीजै ।
सूरदास[3] ऐसे सुत कौ जस, स्रवननि सुनि-सुनि जीजै ॥ ६ ॥
॥६२७॥

---

* (ना) गुनकली । (का, क) केदारो ।

† यह पद (के, पू) मेँ नहीँ है ।

❀ (ना) मालकौस ।

(१) तिहिँ विधि दुराइ—१, ११, १५ । (२) छल बल करि उपाय कैसैहूँ—२, ३, १६ ।

(३) सुनहु सूर ऐसे सुत कौ [...] निरखि निरखि जग जीजै—१, ११, १४, १५ ।

*राग बिहागरौ

† देवकी मन-मन चकित भई।

देखहु आइ पुत्र-मुख काहे न, ऐसी कहुँ देखी न दई।
सिर पर मुकुट, पीत उपरैना, भृगु-पद उर, भुज चारि धरे।
पूरब कथा सुनाइ कही हरि, तुम माँग्यौ इहिं भेष करे।
छोरे निगड़, सोआए पहरू, द्वारे कौ कपाट उघरयौ।
तुरत मोहिं गोकुल पहुँचावहु, यह कहि कै सिसु बेष धरयौ।
तब बसुदेव उठे यह सुनतहिं, हरषवंत नँद-भवन गए।
बालक धरि, लै सुरदेवी कौं, आइ सूर मधुपुरी ठए॥ ८॥

॥ ६२६ ॥

❀ राग केदारौ

अहो पति सो उपाइ कछु कीजै।

जिहिं उपाइ[1] अपनौ यह बालक, राखि कंस सौं लीजै।
मनसा, बाचा, कहत कर्मना, नृप कबहूँ न पतीजै।
बुधि[2], बल, छल, कल, कैसेँहु करिकै, काढ़ि अनतहीं दीजै।
नाहिँन इतनौ भाग जो यह रस, नित लोचन-पुट पीजै।
सूरदास[3] ऐसे सुत कौ जस, स्रवननि सुनि-सुनि जीजै॥ ९॥

॥६२७॥

---

* (ना) गुनकली। (का, क) केदारो।

† यह पद (के, पू) में नहीं है।

❀ (ना) मालकौस।

(१) तिहिं विधि दुराइ—१, ११, १५। (२) छल बल करि उपाय कैसैहूँ—२, ३, १६।

(३) सुनहु सूर ऐसे सुत कौ मुख निरखि निरखि जग जीजै—१, ६, ११, १४, १५।

* राग धनाश्री

अँधियारी भादौं की रात ।
बालक-हित बसुदेव-देवकी, बैठि बहुत पछितात ।
बीच नदी, घन गरजत बरषत, दामिनि कौंधति जात ।
बैठत-उठत सेज-सोवत मैं कंस-डरनि अकुलात ।
गोकुल बाजत सुनी बधाई, लोगनि हियैं सुहात ।
सूरदास आनंद नंद कैं, देत कनक नग दात ॥ १२ ॥
॥ ६३० ॥

⊛ राग बिलावल

† गोकुल प्रगट भए हरि आइ ।
अमर[1]-उधारन, असुर-सँहारन, अंतरजामी त्रिभुवनराइ ।
माथैं धरि बसुदेव जु ल्याए, नंद-महर-घर गए पहुँचाइ ।
जागी महरि, पुत्र-मुख देख्यौ, पुलकि अंग उर मैं न समाइ ।
गदगद कंठ, बोल नहिं आवै, हरषवंत ह्वै नंद बुलाइ ।
आवहु कंत, देव परसन भए, पुत्र भयौ, मुख देखौ धाइ ।
दौरि नंद गए, सुत-मुख देख्यौ, सो सुख मोपै बरनि न जाइ ।
सूरदास पहिलैं ही माँग्यौ, दूध-पियावन जसुमति माइ ॥ १३ ॥
॥ ६३१ ॥

---

* (ना) गुनकली । (का) केदारा । (के, पू) मलार । (काँ) देवगधार ।

⊛ (ना) रामकली । (क) आसावरी ।

† यह पद (के, पू) में नहीं है ।

(१) अधम—६ ।

* राग धनाश्री

अँधियारी भादौं की रात ।
बालक-हित बसुदेव-देवकी, बैठि बहुत पछितात ।
बीच नदी, घन गरजत बरषत, दामिनि कौंधति जात ।
बैठत-उठत सेज-सोवत मैं कंस-डरनि अकुलात ।
गोकुल बाजत सुनी बधाई, लोगनि हियैं सुहात ।
सूरदास आनंद नंद कैं, देत कनक नग दात ॥ १२ ॥
॥ ६३० ॥

⊛ राग बिलावल

† गोकुल प्रगट भए हरि आइ ।
अमर[1]-उधारन, असुर-सँहारन, अंतरजामी त्रिभुवनराइ ।
माथैं धरि बसुदेव जु ल्याए, नंद-महर-घर गए पहुँचाइ ।
जागी महरि, पुत्र-मुख देख्यौ, पुलकि अंग उर मैं न समाइ ।
गदगद कंठ, बोल नहिं आवै, हरषवंत ह्वै नंद बुलाइ ।
आवहु कंत, देव परसन भए, पुत्र भयौ, मुख देखौ धाइ ।
दौरि नंद गए, सुत-मुख देख्यौ, सो सुख मोपै बरनि न जाइ ।
सूरदास पहिलैं ही माँग्यौ, दूध-पियावन जसुमति माइ ॥ १३ ॥
॥ ६३१ ॥

---

* (ना) गुनकली । (का) केदारा । (के, पू) मलार । (काँ) देवगधार ।

⊛ (ना) रामकली । (क) आसावरी ।

† यह पद (के, पू) में नहीं है ।

(१) अधम—६ ।

* राग देवगंधार

† झगरिनि तैं हौं बहुत खिझाई ।
कंचन-हार दिऐं नहिं मानति, तुहीं अनोखी दाई ।
बेगिहिं नार छेदि बालक कौ, जाति बयारि भराई ।
सत संजम, तीरथ-व्रत कीन्हैं, तब यह संपति पाई ।
मेरौ चीत्यौ भयौ नँदरानी, नंद-सुवन सुखदाई ।
दीजै बिदा, जाउँ घर अपनैं, काल्हि साँझ की आई ।
इतनी सुनत मगन ह्वै रानी बोलि लए नँदराई ।
सूरदास कंचन के अभरन लै झगरिनि पहिराई ॥ १६ ॥
॥ ६३४ ॥

⊛ राग धनाश्री

‡ जसुमति लटकति पाइ परै ।
तेरौ भलौ मनैहौं झगरिनि, तू मति मनहिं डरै ।
दीन्हौ हार गरैं, कर कंकन, मोतिनि थार भरै ।
सूरदास स्वामी प्रगटे हैं, औसर पै[1] झगरै ॥ १७ ॥
॥ ६३५ ॥

राग बिहागरौ

§ हरि कौ नार न छीनौं माई ।
पूत भयौ जसुमति रानी कैं, अर्द्धराति हौं आई ।

* (कां) कान्हरा ।
† यह पद केवल (गो, कां) में है ।
⊛ (कां) देवगंधार ।
‡ यह पद केवल (वे, गो, जौ, कां) में है ।
(1) पाइ—१, ११, १४ ।
§ यह पद केवल (गो) में है ।

* राग देवगंधार

† झगरिनि तैं हौं बहुत खिझाई ।
कंचन-हार दिऐँ नहिँ मानति, तुहीँ अनोखी दाई ।
बेगिहिँ नार छेदि बालक कौ, जाति बयारि भराई ।
सत संजम, तीरथ-व्रत कीन्हैँ, तब यह संपति पाई ।
मेरौ चीत्यौ भयौ नँदरानी, नंद-सुवन सुखदाई ।
दीजै बिदा, जाउँ घर अपनैँ, काल्हि साँझ की आई ।
इतनी सुनत मगन ह्वै रानी बोलि लए नँदराई ।
सूरदास कंचन के अभरन लै झगरिनि पहिराई ॥ १६ ॥
॥ ६३४ ॥

❀ राग धनाश्री

‡ जसुमति लटकति पाइ परै ।
तेरौ भलौ मनैहौँ झगरिनि, तू मति मनहिँ डरै ।
दीन्हौ हार गरैँ, कर कंकन, मोतिनि थार भरै ।
सूरदास स्वामी प्रगटे हैँ, औसर पै[१] झगरै ॥ १७ ॥
॥ ६३५ ॥

राग बिहागरौ

§ हरि कौ नार न छीनौँ माई ।
पूत भयौ जसुमति रानी कैँ, अर्द्धराति हौँ आई ।

---

* (कां) कान्हरा ।
† यह पद केवल (गो, कां) मेँ है ।

❀ (कां) देवगंधार ।
‡ यह पद केवल (वे, गो, जौ, कां) मेँ है ।

(१) पाइ—१, ११, १२ ।
§ यह पद केवल (गो) मेँ है ।

कत हौ गहर करत बिन[1] काजैं, बेगि चलौ उठि धाइ।
अपने-अपने मन कौ चीत्यौ, नैननि देख्यौ आइ।
एक फिरत दधि दूब धरत[2] सिर, एक रहत गहि पाइ।
एक परस्पर देत बधाई, एक उठत हँसि गाइ।
बालक-बृद्ध-तरुन-नरनारिनि, बढ़्यौ चौगुनौ चाइ।
सूरदास सब प्रेम-मगन भए, गनत न राजा-राइ॥ २०॥
॥ ६३८॥

* राग रामकली

† हौं[3] इक नई बात सुनि आई।
महरि जसोदा ढोटा जायौ, घर[4]-घर होति बधाई।
द्वारैं भीर गोप-गोपिनि की, महिमा बरनि न जाई।
अति आनंद होत गोकुल मैं, रतन भूमि सब छाई।
नाचत बृद्ध, तरुन अरु बालक, गोरस-कीच मचाई।
सूरदास स्वामी[5] सुख-सागर, सुंदर स्याम कन्हाई॥ २१॥
॥ ६३९॥

* राग रामकली

‡ हौं सखि, नई चाह इक[6] पाई।
ऐसे दिननि नंद कैं सुनियत, उपज्यौ पूत कन्हाई।

---

(१) रे भैया—१, ११। (२) बँधावत—१, ११। लिए कर—६।
* (ना) मलार (क) धनाश्री (का) सारग (रा) विलावल।
† यह पद (के, पू) में नहीं है।
(३) आजु इक भली बात—२, ३, १६, १८, १६। (४) आगन बजति—२, ३, १६, १८, १६। (५) प्रभु अंतरजामी नंद-सुवन सुखदाई—२, ३, १६, १८ १६।
* (ना) मलार।
‡ यह पद (के, पू) में नहीं है।
(६) सुनि आई—२, ३, १८ १६।

कत हौ गहर करत बिन[1] काजैं, बेगि चलौ उठि धाइ ।
अपने-अपने मन कौ चीत्यौ, नैननि देख्यौ आइ ।
एक फिरत दधि दूब धरत[2] सिर, एक रहत गहि पाइ ।
एक परस्पर देत बधाई, एक उठत हँसि गाइ ।
बालक-बृद्ध-तरुन-नरनारिनि, बढ्यौ चौगुनौ चाइ ।
सूरदास सब प्रेम-मगन भए, गनत न राजा-राइ ॥ २० ॥
॥ ६३८ ॥

* राग रामकली

† हौं[3] इक नई बात सुनि आई ।
महरि जसोदा ढोटा जायौ, घर[4]-घर होति बधाई ।
द्वारैं भीर गोप-गोपिनि की, महिमा बरनि न जाई ।
अति आनंद होत गोकुल मैं, रतन भूमि सब छाई ।
नाचत बृद्ध, तरुन अरु बालक, गोरस-कीच मचाई ।
सूरदास स्वामी[5] सुख-सागर, सुंदर स्याम कन्हाई ॥ २१ ॥
॥ ६३९ ॥

* राग रामकली

‡ हौं सखि, नई चाह इक[6] पाई ।
ऐसे दिननि नंद कैं सुनियत, उपज्यौ पूत कन्हाई ।

---

(१) रे भैया—१, ११ । (२) गावत—१, ११ । लिए कर—९ ।

* (ना) मलार (क) गाश्री (कां) सारग (रा) लावल ।

† यह पद (के, पू) में नहीं है ।

(३) आजु इक भली बात—२, ३, १६, १८, १९ । (४) आगन वजति—२, ३, १६, १८, १९ । (५) प्रभु अतरजामी नंद-सुवन सुखदाई—२, ३, १६, १८ १९ ।

* (ना) मलार ।

‡ यह पद (के, पू) में नहीं है ।

(६) सुनि आई—२, ३, १८ १९ ।

राग आसावरी

ब्रज भयौ महर कैं पूत, जब यह बात सुनी ।
सुनि आनंदे सब लोग, गोकुल-गनक-गुनी ।
अति पूरन पूरे पुन्य, रोपी सुथिर[1] थुनी ।
ग्रह-लगन-नषत-पल[2] सोधि, कीन्ही बेद-धुनी ।
सुनि धाईं सब ब्रजनारि, सहज सिंगार किये ।
तन पहिरे नूतन चीर, काजर नैन दिये ।
कसि कंचुकि, तिलक लिलार, सोभित हार हिये ।
कर-कंकन, कंचन-थार, मंगल-साज लिये ।
सुभ स्रवननि तरल तरौन, बेनी सिथिल गुही ।
सिर बरषत सुमन सुदेस, मानौ मेघ फुही ।
मुख मंडित रोरी रंग, सेंदुर माँग छुही ।
उर अंचल उड़त न जानि, सारो सुरँग सुही ।
ते अपनैं-अपनैं मेल, निकसीं भाँति भली ।
मनु लाल-मुनैयनि पाँति, पिंजरा[3] तोरि चली ।
गुन गावत मंगल-गीत, मिलि दस पाँच अली ।
मनु भोर भएँ रवि देखि, फूलीं कमल-कली ।
पिय[4]-पहिलें पहुँचीं जाइ अति आनंद भरीं ।
लइँ भीतर भवन बुलाइ, सब सिसु-पाइ परीं ।
इक बदन उघारि निहारि, देहिं असीस खरी ।
चिरजीवौ जसुदा-नंद, पूरन-काम करी ।

---

① अटल—१, ११, १५ । सुघर—२ । सुफल—६ । ② बल—१, ११, १६ । सब—६ । ③ पिंजर चूरि—१, ६, ११, १५ । पिँजरा जोरि—२, १८ । ④ इक—२, ३, ६, १८ ।

राग आसावरी

ब्रज भयौ महर कैं पूत, जब यह बात सुनी ।
सुनि आनंदे सब लोग, गोकुल-गनक-गुनी ।
अति पूरन पूरे पुन्य, रोपी सुथिर[1] थुनी ।
ग्रह-लगन-नषत-पल[2] सोधि, कीन्ही बेद-धुनी ।
सुनि धाईं सब ब्रजनारि, सहज सिंगार किये ।
तन पहिरे नूतन चीर, काजर नैन दिये ।
कसि कंचुकि, तिलक लिलार, सोभित हार हिये ।
कर-कंकन, कंचन-थार, मंगल-साज लिये ।
सुभ स्रवननि तरल तरौन, बेनी सिथिल गुही ।
सिर बरषत सुमन सुदेस, मानौ मेघ फुही ।
मुख मंडित रोरी रंग, सेंदुर माँग छुही ।
उर अंचल उड़त न जानि, सारो सुरँग सुही ।
ते अपनैं-अपनैं मेल, निकसीं भाँति भली ।
मनु लाल-मुनैयनि पाँति, पिंजरा[3] तोरि चली ।
गुन गावत मंगल-गीत, मिलि दस पाँच अली ।
मनु भोर भएँ रवि देखि, फूलीं कमल-कली ।
पिय[4]-पहिलैं पहुँचीं जाइ अति आनंद भरीं ।
लइँ भीतर भवन बुलाइ, सब सिसु-पाइ परीं ।
इक बदन उघारि निहारि, देहिं असीस खरी ।
चिरजीवौ जसुदा-नंद, पूरन-काम करी ।

---

(१) अटल—१, ११, १९ । वर—२ । सुफल—६ । (२) वल—१, ११, १६ । सब—६ । (३) पिंजर चूरि—१, ६, ११, १९ । पिँजरा जोरि—२, १८ । (४) इक—२, ३, ६, १८ ।

तहँ गैयाँ गनो न जाहिँ, तरुनी बच्छ बढ़ीँ ।
जे चरहिँ जमुन कैँ तीर, दूनैँ दूध चढ़ीँ ।
खुर ताँबैँ, रूपैँ पीठि, सोनैँ सीँग मढ़ीँ ।
ते दीन्हीँ द्विजनि अनेक, हरषि असीस पढ़ीँ ।
सब इष्ट मित्र अरु बंधु, हँसि-हँसि बोलि लिये ।
मथि मृगमद-मलय-कपूर, माथैँ तिलक किये ।
उर मनि-माला पहिराइ, बसन बिचित्र दिये ।
दै दान-मान-परिधान, पूरन-काम किये ।
बंदीजन - मागध - सूत, आँगन - भौन भरे ।
ते बोलैँ लै-लै नाउँ, नहिँ हित कोउ बिसरे ।
मनु बरषत मास अषाढ़, दादुर-मोर ररे ।
जिन जो जाँच्यौ सोइ दीन, अस नँदराइ ढरे ।
तब अंबर और मँगाइ, सारो सुरँग चुनी ।
ते दीनी बधुनि बुलाइ, जैसी जाहि बनी ।
ते निकसीँ देति असीस, रुचि अपनी-अपनी ।
बहुरीँ सब अति आनंद, निज गृह गोप-धनी ।
पुर घर-घर भेरि-मृदंग, पटह-निसान बजे ।
वर वारनि वंदनवार, कंचन कलस सजे ।
ता दिन तैँ वै व्रज लोग, सुख-संपति न तजे ।
सुनि सबकी गति यह सूर, जे हरि-चरन भजे ॥ २४ ॥

॥ ६४२ ॥

तहँ गैयाँ गनो न जाहिँ, तरुनी बच्छ बढ़ीँ ।
जे चरहिँ जमुन कैँ तीर, दूनैँ दूध चढ़ीँ ।
खुर ताँबैँ, रूपैँ पीठि, सोनैँ सीँग मढ़ीँ ।
ते दीन्हीँ द्विजनि अनेक, हरषि असीस पढ़ीँ ।
सब इष्ट मित्र अरु बंधु, हँसि-हँसि बोलि लिये ।
मथि मृगमद-मलय-कपूर, माथैँ तिलक किये ।
उर मनि-माला पहिराइ, बसन बिचित्र दिये ।
दै दान-मान-परिधान, पूरन-काम किये ।
बंदीजन - मागध - सूत, आँगन - भौन भरे ।
ते बोलैँ लै-लै नाउँ, नहिँ हित कोउ बिसरे ।
मनु बरषत मास अषाढ़, दादुर-मोर ररे ।
जिन जो जाँच्यौ सोइ दीन, अस नँदराइ ढरे ।
तब अंबर और मँगाइ, सारी सुरँग चुनी ।
ते दीनी बधुनि बुलाइ, जैसी जाहि बनी ।
ते निकसीँ देति असीस, रुचि अपनी-अपनी ।
बहुरीँ सब अति आनंद, निज गृह गोप-धनी ।
पुर घर-घर भेरि-मृदंग, पटह-निसान बजे ।
बर बारनि बंदनवार, कंचन कलस सजे ।
ता दिन तैँ वै ब्रज लोग, सुख-संपति न तजे ।
सुनि सबकी गति यह सूर, जे हरि-चरन भजे ॥ २४ ॥

॥ ६४२ ॥

अनंद अतिसै भयौ घर-घर, नृत्य ठावँहिँ-ठावँ।
नंद-द्वारैं भेँट लै-लै उमह्यौ गोकुल गावँ।
चौक चंदन लीपि कै, धरि आरती संजोइ।
कहति घोष-कुमारि, ऐसौ अनँद जौ नित होइ!
द्वार सथिया देति स्यामा, सात सीँक बनाइ।
नव किसोरी मुदित ह्वै-ह्वै गहति जसुदा-पाइ।
करि[1] अलिंगन[2] गोपिका, पहिरैं अभूषन-चीर।
गाइ-बच्छ सँवारि ल्याए, भई ग्वारनि भीर।
मुदित मंगल सहित लीला करैं गोपी-ग्वाल।
हरद, अच्छत, दूब, दधि लै, तिलक करैं ब्रजबाल।
एक एक न गनत काहूँ, इक खिलावत गाइ।
एक हेरी देहिँ, गावहिँ, एक भेँटहिँ धाइ।
एक बिरध-किसोर-बालक, एक जोबन जोग।
कृष्न-जन्म सु प्रेम-सागर, क्रीड़ैं[3] सब ब्रज-लोग।
प्रभु मुकुंद कैं हेत नूतन होहिँ घोष-विलास।
देखि ब्रज की संपदा कौं, फूलै सूरजदास ॥२६॥

॥६४४॥

---

① घर घर तैं आईं गोपिका पहिरि अभूषन चीर—१८। ② अलंकृत—१, ६, ११, १५। क्रीड़त—१, ३, ११, १५। ③ तरत—२। परत—१६।

अनंद अतिसै भयौ घर-घर, नृत्य ठावँहिँ-ठावँ।
नंद-द्वारैँ भेँट लै-लै उमह्यौ गोकुल गावँ।
चौक चंदन लीपि कै, धरि आरती संजोइ।
कहति घोष-कुमारि, ऐसौ अनँद जौ नित होइ!
द्वार सथिया देति स्यामा, सात सीँक बनाइ।
नव किसोरी मुदित ह्वै-ह्वै गहति जसुदा-पाइ।
करि[1] अलिंगन[2] गोपिका, पहिरैँ अभूषन-चीर।
गाइ-बच्छ सँवारि ल्याए, भई ग्वारनि भीर।
मुदित मंगल सहित लीला करैँ गोपी-ग्वाल।
हरद, अच्छत, दूब, दधि लै, तिलक करैँ ब्रजबाल।
एक एक न गनत काहूँ, इक खिलावत गाइ।
एक हेरी देहिँ, गावहिँ, एक भेँटहिँ धाइ।
एक बिरध-किसोर-बालक, एक जोबन जोग।
कृष्न-जन्म सु प्रेम-सागर, क्रीड़ैँ[3] सब ब्रज-लोग।
प्रभु मुकुंद कैँ हेत नूतन होहिँ घोष-बिलास।
देखि ब्रज की संपदा कौँ, फूलै सूरजदास ॥२६॥

॥६४४॥

---

(१) घर घर तैँ आईँ गोपिका पहिरि अभूषन चीर—१८। (२) अलंकृत—१, ६, ११, १५। (३) क्रीड़त—१, ३, ११, १५। तरत—२। परत—१६।

बनि ब्रज-सुंदरि चलीं, सु गाइ बधावन रे।
कनक-थार रोचन-दधि, तिलक बनावन रे।
नंद-घरहिं चलि गईं, महरि जहँ पावन रे।
पाइनि परि सब बधू, महरि बैठावन रे।
जसुमति धनि यह कोखि, जहाँ रहे बावन रे।
भलैं सु दिन भयौ पूत, अमर अजरावन रे।
जुग-जुग जीवहु कान्ह, सबनि मन भावन रे।
गोकुल-हाट-बजार करत जु लुटावन रे।
घर-घर बजे निसान, सु नगर सुहावन रे।
अमर-नगर उतसाह, अप्सरा-गावन[1] रे।
ब्रह्म लियौ अवतार, दुष्ट के दावन रे।
दान सबै जन देत, बरषि जनु सावन रे।
मागध, सूत, भाँट, धन लेत जुरावन रे।
चोवा - चंदन - अबिर, गलिनि छिरकावन रे।
ब्रह्मादिक, सनकादिक, गगन भरावन रे।
कस्यप रिषि सुर-तात, सु लगन गनावन रे।
तीनि - भुवन - आनंद, कंस - डरपावन रे।
सूरदास प्रभु जनमे, भक्त-हुलसावन रे॥ २८ ॥

॥६४६॥

---

(१) चावन—६, ६, ११, १४।

बनि ब्रज-सुंदरि चलीं, सु गाइ बधावन रे।
कनक-थार रोचन-दधि, तिलक बनावन रे।
नंद-घरहिं चलि गईं, महरि जहँ पावन रे।
पाइनि परि सब बधू, महरि बैठावन रे।
जसुमति धनि यह कोखि, जहाँ रहे बावन रे।
भलैं सु दिन भयौ पूत, अमर अजरावन रे।
जुग-जुग जीवहु कान्ह, सबनि मन भावन रे।
गोकुल-हाट-बजार करत जु लुटावन रे।
घर-घर बजै निसान, सु नगर सुहावन रे।
अमर-नगर उतसाह, अप्सरा-गावन[1] रे।
ब्रह्म लियौ अवतार, दुष्ट के दावन रे।
दान सबै जन देत, बरषि जनु सावन रे।
मागध, सूत, भाँट, धन लेत जुरावन रे।
चोवा - चंदन - अबिर, गलिनि छिरकावन रे।
ब्रह्मादिक, सनकादिक, गगन भरावन रे।
कस्यप रिषि सुर-तात, सु लगन गनावन रे।
तीनि - भुवन - आनंद, कंस - डरपावन रे।
सूरदास प्रभु जनमे, भक्त-हुलसावन रे ॥ २८ ॥

॥६४६॥

(1) चावन—६, ९, ११, १४।

आनँद-मगन सब अमर गगन छाए पुहुप बिमान चढ़े पहर पहर के।
सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भए, संतनि हरष, दुष्ट-जन-मन धरके ॥३०॥
॥ ६४८ ॥

राग काफी

† (माई) आजु हो बधायौ बाजै नंद गोप-राइ कै ।
जदुकुल-जादौराइ जनमे हैं आइ कै ।
आनंदित गोपी-ग्वाल, नाचैं कर दै-दै ताल, अति अहलाद भयौ जसुमति माइ कै।
सिर पर दूब धरि, बैठे नंद सभा-मधि, द्विजनि कौं गाइ दीनी बहुत मँगाइ कै।
कनक कौ माट लाइ, हरद-दही मिलाइ, छिरकैं परसपर छल-बल धाइ कै ।
आठैं कृष्न पच्छ भादौं, महर कैं दधि कादौं, मोतिनि बँधायौ बार महल मैं जाइ कै।
ढाढ़ी औ ढाढ़िनि गावैं, ठाढ़े हुरके बजावैं, हरषि असीस देत मस्तक नवाइ कै।
जोइ-जोइ माँग्यौ जिनि, सोइ-सोइ पायौ तिनि, दीजै सूरदास[1] दर्स भक्तनि बुलाइ कै ३
॥६४६॥

* राग जैतश्री

‡ आजु बधाई नंद कैं माई । ब्रज की नारि सकल जुरि आई॥ ।
सुंदर नंद महर कैं मंदिर । प्रगट्यौ पूत सकल सुख-कंदर ।

---

† यह पद (वे, ल, का, गो, जै) मैं है ।
(१) दान—६, १५ ।

* (ना) कामोद ।
‡ यह पद (का, के, पू) मैं नहीं है ।

|| यह चरण केवल (स) मैं है ।

आनँद-मगन सब अमर गगन छाए पुहुप बिमान चढ़े पहर पहर के
सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भए, संतनि हरष, दुष्ट-जन-मन धरके ॥३
॥ ६४८

राग का

† (माई) आजु हो बधायौ बाजै नंद गोप-राइ कै ।
जदुकुल-जादौराइ जनमे हैं आइ कै ।
आनंदित गोपी-ग्वाल, नाचैं कर दै-दै ताल, अति अहलाद भयौ जसुमति माइ कै
सिर पर दूब धरि, बैठे नंद सभा-मधि, द्विजनि कौं गाइ दीनी बहुत मँगाइ कै
कनक कौ माट लाइ, हरद-दही मिलाइ, छिरकैं परसपर छल-बल धाइ कै
आठैं कृष्न पच्छ भादौं, महर कैं दधि कादौं, मोतिनि बँधायौ बार महल मैं जाइ
ढाढ़ी औ ढाढ़िनि गावैं, ठाढ़े हुरके बजावैं, हरषि असीस देत मस्तक नवाइ कै
जोइ-जोइ माँग्यौ जिनि, सोइ-सोइ पायौ तिनि, दीजै सूरदास[1] दर्स भक्तनि बुलाइकै
॥६४९।

* राग जैत*

‡ आजु बधाई नंद कैं माई । ब्रज की नारि सकल जुरि आई॥ ।
सुंदर नंद महर कैं मंदिर । प्रगट्यौ पूत सकल सुख-कंदर ।

---

† यह पद (वे, ल, का, गो, जै) में है ।

(१) दान—६, १४ ।

* (ना) कामोद ।

‡ यह पद (का, के, पू) में नहीं है ।

|| यह चरण केवल (स) में है ।

अति आनंद बढ़्यौ गोकुल मैं, उपमा कही न जाइ।
सूरदास धनि नँद की घरनी, देखत नैन सिराइ॥ ३३॥
॥६५१॥

राग जैजैवंती

†(माई) आजु तौ बधाइ बाजै मँदिर महर के।
फूले फिरैं गोपी-ग्वाल ठहर ठहर के।
फूली फिरैं धेनु धाम, फूली गोपी अँग अँग,
फूले फरे तरवर आनँद लहर के।
फूले बंदीजन द्वारे, फूले फूले बंदवारे,
फूले जहाँ जोइ सोइ गोकुल सहर के।
फूले फिरैं जादौकुल आनँद समूल मूल,
अंकुरित पुन्य फूले पाछिले पहर के।
उमँगे जमुन-जल, प्रफुलित कुंज-पुंज,
गरजत कारे भारे जूथ जलधर के।
नृत्यत मदन फूले, फूली रति अँग अँग,
मन के मनोज फूले हलधर[1] वर के।
फूले द्विज-संत-वेद, मिटि गयौ कंस-खेद,
गावत बधाइ सूर भीतर-बहर के।
फूली हैं जसोदा रानी, सुत जायौ सार्ङ्गपानी,
भूपति उदार फूले भाग[2] फरे घर के॥ ३४॥
॥६५२॥

† यह पद केवल (वे, शा, गो, जै) में है। (१) हरि हलधर के—११ (२) भार—१, ११।

अति आनंद बढ़्यौ गोकुल मैं, उपमा कही न जाइ।
सूरदास धनि नँद की घरनी, देखत नैन सिराइ ॥ ३३ ॥
॥६५१॥

राग जैजैवंती

†(माई) आजु तौ बधाइ बाजै मँदिर महर के।
फूले फिरैं गोपी-ग्वाल ठहर ठहर के।
फूली फिरैं धेनु धाम, फूली गोपी अँग अँग,
फूले फरे तरवर आनँद लहर के।
फूले बंदीजन द्वारे, फूले फूले बंदवारे,
फूले जहाँ जोइ सोइ गोकुल सहर के।
फूले फिरैं जादौकुल आनँद समूल मूल,
अंकुरित पुन्य फूले पाछिले पहर के।
उमँगे जमुन-जल, प्रफुलित कुंज-पुंज,
गरजत कारे भारे जूथ जलधर के।
नृत्यत मदन फूले, फूली रति अँग अँग,
मन के मनोज फूले हलधर[1] वर के।
फूले द्विज-संत-वेद, मिटि गयौ कंस-खेद,
गावत बधाइ सूर भीतर-बहर के।
फूली है जसोदा रानी, सुत जायौ सार्ङ्गपानी,
भूपति उदार फूले भाग[2] फरे घर के ॥ ३४ ॥
॥६५२॥

---

† यह पद केवल (वे, शा, गो, जै) में है। (१) हरि हलधर के—११ (२) भार—१, १४।

धन्य नंद, धनि धन्य जसोदा, जिन जायौ अस पूत।
धन्य भूमि, ब्रजबासी धनि - धनि, आनँद करत अकूत।
घर-घर होत अनंद बधाए, जहँ - तहँ मागध-सूत।
मनि-मानिक, पाटंबर-अंबर, लेत न बनत विभूत[1]।
हय-गय खोलि भँडार दिए सब, फेरि भरे ता भाँति।
जबहिँ देत तबहीँ फिरि देखत, संपति घर न समाति।
ते मोहिँ मिले जात घर अपनैँ, मैँ बूझी तब जाति।
हँसि-हँसि दौरि मिले अंकम भरि, हम तुम एकै ज्ञाति।
संपति देहु, लेहुँ नहिं एकौ, अन्न-वस्त्र किहिँ काज?
जो मैँ तुम सौँ माँगन आयौ, सो लैहौँ नँदराज।
अपने सुत कौ बदन दिखावहु, बड़े महर सिरताज।
तुम साहब, मैँ ढाढ़ो तुम्हरौ, प्रभु मेरे ब्रजराज।
चंद्र-वदन-दरसन-संपति दै, सो मैँ लै घर जाउँ।
जो संपति सनकादिक दुरलभ, सो है तुम्हरैँ ठाउँ।
जाकौँ नेति नेति स्रुति गावत, तेइ कमल-पद ध्याउँ।
हौँ तेरौ जनम-जनम कौ ढाढ़ो, सूरज दास कहाउँ॥ ३६॥

॥ ६५४ ॥

* राग धनाश्री

†(नंद जू) दुःख गयौ, सुख आयौ सबनि कौँ, देव[2]-पितर भल मान्यौ।
तुम्हरौ पुत्र प्रान सबहिनि कौ, भुवन चतुर्दस जान्यौ।

---

(१) बहूत—१,२,६,११,१२।
* (ना) देवसाख।

† यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है।

(२) दियौ पुत्र फल मानो—१, ११, १५।

धन्य नंद, धनि धन्य जसोदा, जिन जायौ अस पूत ।
धन्य भूमि, ब्रजबासी धनि-धनि, आनँद करत अकूत ।
घर-घर होत अनंद बधाए, जहँ-तहँ मागध-सूत ।
मनि-मानिक, पाटंबर-अंबर, लेत न बनत बिभूत[1] ।
हय-गय खोलि भँडार दिए सब, फेरि भरे ता भाँति ।
जबहिँ देत तबहीँ फिरि देखत, संपति घर न समाति ।
ते मोहिँ मिले जात घर अपनैँ, मैँ बूझी तब जाति ।
हँसि-हँसि दौरि मिले अंकम भरि, हम तुम एकै ज्ञाति ।
संपति देहु, लेहुँ नहिं एकौ, अन्न-वस्त्र किहिँ काज ?
जो मैँ तुम सौं माँगन आयौ, सो लैहौं नँदराज ।
अपने सुत कौ बदन दिखावहु, बड़े महर सिरताज ।
तुम साहब, मैँ ढाढ़ो तुम्हरौ, प्रभु मेरे ब्रजराज ।
चंद्र-वदन-दरसन-संपति दै, सो मैँ लै घर जाउँ ।
जो संपति सनकादिक दुरलभ, सो है तुम्हरैँ ठाउँ ।
जाकौं नेति नेति स्रुति गावत, तेइ कमल-पद ध्याउँ ।
हौं तेरौ जनम-जनम कौ ढाढ़ो, सूरज दास कहाउँ ॥ ३६ ॥

॥ ६५४ ॥

* राग धनाश्री

†(नंद जू) दुःख गयौ, सुख आयौ सबनि कौं, देव[2]-पितर भल मान्यौ ।
तुम्हरौ पुत्र प्रान सबहिनि कौ, भुवन चतुर्दस जान्यौ ।

---

(१) बहूत—१,२,६,११,१५ ।
* (ना) देवसाख ।

† यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है ।

(२) दियौ पुत्र फल मानो—१, ११, १५

जो जाँच्यौ सोई तिन पायौ, तुम्हरी[1] भई बड़ाई ।
भक्ति देहु, पालनैं झुलाऊँ, सूरदास बलि जाई ॥ ३८ ॥

॥६५६॥

राग केदारौ

† नंद-उदै सुनि आयौ हो, वृषभानु कौ जगा ।
दैबे कौं बड़ौ महर, देत न लावै गहर, लाल की बधाई पाऊँ लाल कौ झगा ।
प्रफुलित ह्वै कै आनि, दीनी है जसोदा रानी, झोनीयै झगुलि तामैं कंचन-तगा ।
नाचै फूल्यौ अँगनाइ, सूर बकसीस पाइ, माथे कै चढ़ाइ लीनौ लाल कौ बगा॥३९॥

॥६५७॥

* राग सारंग

‡ गौरि[2] गनेस्वर बीनऊँ (हो), देवी सारद तोहिं ।
गावौं हरि कौ सोहिलौ (हो), मन-आखर दै मोहिं ।
हरषि[3] बधावा मन भयौ (हो), रानी जायौ पूत ।
घर-बाहर माँगैं सबै (हो), ठाढ़े मागध-सूत ।
आठ मास चंदन पियौ (हो), नवएँ पियौ कपूर ।
दसएँ मास मोहन भए (हो), आँगन बाजै तूर ।
हरषीं पास-परोसिनैं (हो), हरष नगर के लोग ।
हरषीं सखी-सहेलरी (हो), आनँद भयौ सुभ[4]-जोग ।

---

(1) तुमरिउ भई बिदाई—१, ११।

† यह पद केवल (वे, गो, जौ) में है।

* (ना) आसावरी।

‡ यह पद (के, पू) में नहीं है।

(2) गुरु—२, ३, १६। (3) बधावौ हरि कौ मन रहिवो रानी जायौ है मोहन पूत—१, ११, १४। बधावा हरि कौ मन भयौ रानी जायौ पूत—२, ३। (4) सुख—१, २, ३, ११, १५।

जो जाँच्यौ सोई तिन पायौ, तुम्हरी[1] भई बड़ाई ।
भक्ति देहु, पालनैं झुलाऊँ, सूरदास बलि जाई ॥ ३८ ॥

॥६५६॥

राग केदारौ

† नंद-उदै सुनि आयौ हो, वृषभानु कौ जगा ।
दैबे कौं बड़ौ महर, देत न लावै गहर, लाल की बधाई पाऊँ लाल कौ झगा ।
प्रफुलित ह्वै कै आनि, दीनी है जसोदा रानी, झीनीयै झगुलि तामैं कंचन-तगा ।
नाचै फूल्यौ अँगनाइ, सूर बकसीस पाइ, माथे कै चढ़ाइ लीनौ लाल कौ बगा ॥३९॥

॥६५७॥

* राग सारंग

‡ गौरि[2] गनेस्वर बीनऊँ (हो), देवी सारद तोहिं ।
गावौं हरि कौ सोहिलौ (हो), मन-आखर दै मोहिं ।
हरषि[3] बधावा मन भयौ (हो), रानी जायौ पूत ।
घर-बाहर माँगैं सबै (हो), ठाढ़े मागध-सूत ।
आठ मास चंदन पियौ (हो), नवएँ पियौ कपूर ।
दसएँ मास मोहन भए (हो), आँगन बाजै तूर ।
हरषीं पास-परोसिनैं (हो), हरष नगर के लोग ।
हरषीं सखी-सहेलरी (हो), आनँद भयौ सुभ[4]-जोग ।

---

(1) तुमरिउ भई बिदाई—१, ११ ।
† यह पद केवल (वे, गो, जौ) में है ।
* (ना) आसावरी ।
‡ यह पद (के, पू) में नहीं है ।
(2) गुरु—२, ३, १६ । (3) बधावौ हरि कौ मन रहिवो रानी जायौ है मोहन पूत—१, ११, १४ । बधावा हरि कौ मन भयौ रानी जायौ पूत—२, ३ । (4) सुख—१, २, ३, ११, १५ ।

* राग काफी

† पालनौ अति सुंदर गढ़ि ल्याउ रे बढ़ैया।
सीतल चंदन कटाउ, धरि खराद रंग लाउ,
बिबिध चौकरी बनाउ, धाउ रे बनैया।
पँच रँग रेसम लगाउ, हीरा मोतिनि मढ़ाउ,
बहु बिधि ज़रि करि जराउ, ल्याउ रे जरैया।
बिसकर्मा सूतहार, रच्यौ काम ह्वै सुनार,
मनिगन लागे अपार, काज महर-छैया।
आनि धरयौ नंद-द्वार, अतिहीं सुंदर सुढार,
ब्रज-बधु कहैं बार-बार धन्य रे गढ़ैया।
पालनौ आन्यौ बनाइ, अति मन मान्यौ सुहाइ,
नीकौ सुभ दिन सुधाइ, झूलौ हो झुलैया।
सखियनि मंगल गवाइ, बहु बिधि बाजे बजाइ,
पौढ़ायौ महल जाइ, बारौ रे कन्हैया।
सूरदास प्रभु की माइ जसुमति, पितु नंदराइ,
जोइ जोइ माँगत सोइ देत हैं बधैया॥ ४१॥
॥ ६५६॥

---

*(ना) संकराभरन। (पू) रामकली।

† यह पद यद्यपि सब प्रतियों में है पर उनके पाठों में बड़ी भिन्नता है। किसी का भी पाठ पूर्णतया सार्थक एवं सुछंद नहीं है। अतः इसके संशोधन में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी। कोई भाग किसी प्रति का, कोई भाग किसी प्रति का लेकर, पाठ को शुद्ध तथा सुबोध बनाने की चेष्टा की गई है।

*राग काफी

† पालनौ अति सुंदर गढ़ि ल्याउ रे बढ़ैया।
सीतल चंदन कटाउ, धरि खराद रंग लाउ,
बिबिध चौकरी बनाउ, धाउ रे बनैया।
पँच रँग रेसम लगाउ, हीरा मोतिनि मढ़ाउ,
बहु बिधि जरि करि जराउ, ल्याउ रे जरैया।
बिसकर्मा सूतहार, रच्यौ काम ह्वै सुनार,
मनिगन लागे अपार, काज महर-छैया।
आनि धरच्यौ नंद-द्वार, अतिहीँ सुंदर सुढार,
ब्रज-बधु कहैँ बार-बार धन्य रे गढ़ैया।
पालनौ आन्यौ बनाइ, अति मन मान्यौ सुहाइ,
नीकौ सुभ दिन सुधाइ, झूलौ हो झुलैया।
सखियनि मंगल गवाइ, बहु बिधि बाजे बजाइ,
पौढ़ायौ महल जाइ, बारौ रे कन्हैया।
सूरदास प्रभु की माइ जसुमति, पितु नंदराइ,
जोइ जोइ माँगत सोइ देत हैँ बधैया॥ ४१ ॥

॥ ६५६ ॥

---

*(ना) संकराभरन। (पू) रामकली।

† यह पद यद्यपि सब प्रतियों में है पर उनके पाठों में बड़ी भिन्नता है। किसी का भी पाठ पूर्णतया सार्थक एवं सुछंद नहीँ है। अतः इसके संशोधन मेँ बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी। कोई भाग किसी प्रति का, कोई भाग किसी प्रति का लेकर, पाठ को शुद्ध तथा सुबोध बनाने की चेष्टा की गई है।

* राग कान्हरौ

† पलना स्याम झुलावति जननी

अति अनुराग परस्पर गावति, प्रफुलित मगन होति नँद-घरनी।
उमँगि-उमँगि प्रभु भुजा पसारत, हरषि जसोमति अंकम भरनी।
सूरदास प्रभु मुदित जसोदा, पूरन भई पुरातन करनी॥ ४४॥
॥ ६६२॥

❁ राग बिलावल

‡ पालनैं गोपाल झुलावैं

सुर-मुनि-देव कोटि तैंतीसौ, कौतुक अंबर छावैं।
जाकौ अंत न ब्रह्मा जानै, सिव-सनकादि न पावैं।
सो अब देखौ नंद-जसोदा, हरषि-हरषि हलरावैं।
हुलसत, हँसत, करत किलकारी, मन अभिलाष बढ़ावैं।
सूर स्याम भक्तनि हित कारन, नाना भेष बनावैं॥ ४५॥
॥ ६६३॥

× राग गौरी

हालरौ हलरावै माता। बलि-बलि जाउँ घोष-सुख-दाता।
जसुमति अपनौ पुन्य बिचारै। बार-बार सिसु-बदन निहारै।

---

* (के) केदारा।
† यह पद (ना, स, द्वृ, कां, रा, श्या) में नहीं है।

❁ (ना) देवगिरि।
‡ यह पद (स, द्वृ, कां, रा, श्या) में नहीं है।

× (ना) ललित। (का, के, पू) गौड़। (कां) मलार। (रा) गौड़मलार।

* राग कान्हरौ

† पलना स्याम झुलावति जननी

अति अनुराग परस्पर गावति, प्रफुलित मगन होति नँद-घरनी।
उमँगि-उमँगि प्रभु भुजा पसारत, हरषि जसोमति अंकम भरनी।
सूरदास प्रभु मुदित जसोदा, पूरन भई पुरातन करनी ॥ ४४ ॥
॥ ६६२ ॥

✿ राग बिलावल

‡ पालनैं गोपाल झुलावैं

सुर-मुनि-देव कोटि तैंतीसौ, कौतुक अंबर छावैं।
जाकौ अंत न ब्रह्मा जानै, सिव-सनकादि न पावैं।
सो अब देखौ नंद-जसोदा, हरषि-हरषि हलरावैं।
हुलसत, हँसत, करत किलकारी, मन अभिलाष बढ़ावैं।
सूर स्याम भक्तनि हित कारन, नाना भेष बनावैं ॥ ४५ ॥
॥ ६६३ ॥

× राग गौरी

हालरौ हलरावै माता। बलि-बलि जाउँ घोष-सुख-दाता।
जसुमति अपनौ पुन्य बिचारै। बार-बार सिसु-बदन निहारै।

---

* (के) केदारा।

† यह पद (ना, म, वृ, कां, रा, श्या) में नहीं है।

✿ (ना) देवगिरि।

‡ यह पद (स, वृ, कां, रा, श्या) में नहीं है।

× (ना) ललित। (का, के, पू) गौड़। (कां) मलार। (रा) गौड़मलार।

पूतना-वध

* राग धनाश्री

आजु हौं राज-काज करि आऊँ ।
बेगि सँहारौं सकल घोष-सिसु, जौ मुख आयसु पाऊँ ।
मोहन-मुर्छन-बसीकरन पढ़ि, अगमति[1] देह बढ़ाऊँ ।
अंग सुभग सजि, ह्वै मधु[2]-मूरति, नैननि माहँ समाऊँ ।
घसि कै[3] गरल चढ़ाइ उरोजनि, लै रुचि सौं पय प्याऊँ ।
सूरज[4] सोच हरौं मन अबहीं, तौ पूतना कहाऊँ ॥ ४९ ॥

॥६६७॥

* राग धनाश्री

† रूप मोहिनी धरि ब्रज आई ।
अद्भुत साजि सिँगार मनोहर, असुर कंस दै पान पठाई ।
कुच बिष बाँटि लगाइ कपट करि, बाल-घातिनी परम सुहाई ।
बैठी हुती जसोदा मंदिर, दुलरावति सुत कुँवर[1] कन्हाई ।
प्रगट भई तहँ आइ पूतना, प्रेरित काल अवधि नियराई ।
आवत पीढ़ा बैठन दीनौ, कुसल बूझि अति निकट बुलाई ।
पौढ़ाए हरि सुभग पालनैं, नंद-घरनि कछु काज सिधाई ।
बालक लियौ उछंग दुष्टमति, हरषित अस्तन-पान कराई ।

---

* (ना) सूहो । (के, पू) जैतश्री । (क) विहागरौ । (रा) गौरी ।

① गहि मति हेरिनि (हेरन) छाऊँ—२, ३, १८ । गति मति हेर न छाऊँ—१९ । ② विधु—२, ३, १९ । ③ ककोल—६ । ④ सूरदास प्रभु जीवत ल्याऊँ—१, ११, १५, १९ ।

(ना) सूहो । (के, पू) जैतश्री । (क) विहागरौ ।

† यह पद (वृ, कां, श्या) में नहीं है ।

⑤ स्याम—१, ३, ६, ११, १५ ।

पूतना-वध

* राग धनाश्री

आजु हौं राज-काज करि आऊँ ।
बेगि सँहारौं सकल घोष-सिसु, जौ मुख आयसु पाऊँ ।
मोहन-मुर्छन-बसीकरन पढ़ि, अगमति[1] देह बढ़ाऊँ ।
अंग सुभग सजि, ह्वै मधु[2]-मूरति, नैननि माहँ समाऊँ ।
घसि कै[3] गरल चढ़ाइ उरोजनि, लै रुचि सौं पय प्याऊँ ।
सूरज[4] सोच हरौं मन अबहीँ, तौ पूतना कहाऊँ ॥ ४९ ॥

॥६६७॥

* राग धनाश्री

† रूप मोहिनी धरि ब्रज आई ।
अद्भुत साजि सिँगार मनोहर, असुर कंस दै पान पठाई ।
कुच बिष बाँटि लगाइ कपट करि, बाल-घातिनी परम सुहाई ।
बैठी हुती जसोदा मंदिर, दुलरावति सुत कुँवर[5] कन्हाई ।
प्रगट भई तहँ आइ पूतना, प्रेरित काल अवधि नियराई ।
आवत पीढ़ा बैठन दीनौ, कुसल बूझि अति निकट बुलाई ।
पौढ़ाए हरि सुभग पालनैँ, नंद-घरनि कछु काज सिधाई ।
बालक लियौ उछंग दुष्टमति, हरषित अस्तन-पान कराई ।

---

* (ना) सूहो। (के, पू) नश्री। (क) विहागरौ। (रा) री।

① गहि मति हेरिनि (हेरन) ऊँ—२, ३, १८। गति मति हेर न छाऊँ—१९। ② विधु—२, ३, १९। ③ ककोल—६। ④ सूरदास प्रभु जीवत ल्याऊँ—१, ११, १५, १९।

(ना) सूहो। (के, पू) जैतश्री। (क) विहागरौ।

† यह पद (वृ, कां, श्या) में नहीं है।

⑤ स्याम—१, ३, ६, ११, १५।

* राग सारंग

†कपट करि ब्रजहिँ पूतना आई।
अति सुरूप, बिष अस्तन लाए, राजा कंस पठाई।
मुख चूमति अरु नैन निहारति, राखति कंठ लगाई।
भाग बड़े तुम्हरे नँदरानी, जिहिँ के कुँवर कन्हाई।
कर गहि छीर पियावति अपनौ, जानत केसवराई।
बाहर ह्वै कै असुर पुकारी, अब बलि लेहु छुड़ाई।
गइ मुरछाइ, परी धरनी पर, मनौ भुवंगम खाई।
सूरदास प्रभु तुम्हरी लीला, भक्तनि गाइ सुनाई॥ ५२॥
॥ ६७०॥

* राग धनाश्री

देखौ यह बिपरीत भई।
अदभुत रूप नारि इक आई, कपट हेत क्यौँ[1] सहै दई?
कान्हैँ[2] लै जसुमति कोरा तैँ, रुचि करि कंठ लगाए।
तब वह देह धरी जोजन लौँ, स्याम रहे लपटाए!
बड़े भाग्य हैँ नंद महर के, बड़भागिनि नँदरानी।
सूर स्याम उर ऊपर[3] उबरे, यह सब घर-घर जानी॥ ५३॥
॥६७१॥

---

* (ना) गूजरी।
† यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है।

* (ना) अहीर। (का) बिलावल। (के, र्का, रा) सोरठी। (क) बिहागरौ।

① कौने पठई—२। ② काहे तैँ जसुमति बौरानी—२, ३। ③ याके—११।

* राग सारंग

†कपट करि ब्रजहिँ पूतना आई।
अति सुरूप, बिष अस्तन लाए, राजा कंस पठाई।
मुख चूमति अरु नैन निहारति, राखति कंठ लगाई।
भाग बड़े तुम्हरे नँदरानी, जिहिँ के कुँवर कन्हाई।
कर गहि छीर पियावति अपनौ, जानत केसवराई।
बाहर ह्वै कै असुर पुकारी, अब बलि लेहु छुड़ाई।
गइ मुरछाइ, परी धरनी पर, मनौ भुवंगम खाई।
सूरदास प्रभु तुम्हरी लीला, भक्तनि गाइ सुनाई॥ ५२॥
॥ ६७०॥

* राग धनाश्री

देखौ यह बिपरीत भई।
अदभुत रूप नारि इक आई, कपट हेत क्यौं[1] सहै दई?
कान्हैँ[2] लै जसुमति कोरा तैँ, रुचि करि कंठ लगाए।
तब वह देह धरी जोजन लौँ, स्याम रहे लपटाए!
बड़े भाग्य हैँ नंद महर के, बड़भागिनि नँदरानी।
सूर स्याम उर ऊपर[3] उबरे, यह सब घर-घर जानी॥ ५३॥
॥६७१॥

---

* (ना) गूजरी।
† यह पद (ल, का, के, [illegible]) मेँ नहीँ है।

* (ना) अहीर। (का) बिलावल। (के, र्का, रा) सोरठी। (क) बिहागरौ।

(१) कौनै पठई—२। (२) काहे तैँ जसुमति बौरानी—२, ३। (३) याके—११।

※ राग जैतश्री

† कन्हैया[1] हालरौ हलरोइ।
हौं वारी तव इंदु-वदन पर, अति छबि अलस[2] भरोइ।
कमल-नयन कौं कपट किए माई, इहिँ ब्रज आवै जोइ।
पालागौं बिधि ताहि बकी ज्यौं, तू तिहिँ तुरत बिगोइ।
सुनि देवता बड़े, जग-पावन, तू पति या[3] कुल कोइ।
पद पूजिहौं, बेगि यह बालक करि दै मोहिँ बड़ोइ।
दुतिया के ससि लौं बाढ़ै सिसु, देखै[4] जननि जसोइ।
यह सुख सूरदास कैं नैननि, दिन-दिन दूनौ होइ[5] ॥ ५६ ॥
॥ ६७४ ॥

श्रीधर—अंगभंग

⊛ राग बिलावल

‡ श्रीधर[6] बाँभन करम कसाई। कह्यौ कंस सौं बचन सुनाई।
प्रभु, मैं तुम्हरौ आज्ञाकारी। नंद-सुवन कौं आवौं मारी।
कंस कह्यौ, तुमतैं यह होइ। तुरत जाहु, करौ बिलँब न कोइ।
श्रीधर नंद-भवन चलि आयौ। जसुदा उठि कै माथ नवायौ।
करौ रसोई मैं बलि जाऊँ। तुम्हरे हेत जमुन-जल ल्याऊँ।
यह कहि जसुदा जमुना गई। श्रीधर कही भली यह भई।

※ (ना) गूजरी। (रा) धनाश्री।

† यह पद (ल) में नहीं है।

(१) कन्हैया हालरो हो—२, ३, ६, १६। कन्हैया हालरो हौं वारी—१४। (२) अलसनि रोई—१, ११। अंस तरो—२। आसुन रो—३। अलसनि रो—६, १७। अलसनि मारी—१४। लाल न रो—१६। लालन रोई—१६। (३) गोकुल—२, ३, १६, १८। (४) देखै जो जित जो—२। देवै जननी हो—३। जननी देखै सोइ—१६। (५) हो—२, ३।

⊛ (ना) जैतश्री।

‡ यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है।

(६) सिद्धर—१। मीधर—२।

* राग जैतश्री

† कन्हैया[1] हालरौ हलरोइ ।
हौं वारी तव इंदु-वदन पर, अति छबि अलस[2] भरोइ ।
कमल-नयन कौं कपट किए माई, इहिं ब्रज आवै जोइ ।
पालागौं बिधि ताहि बकी ज्यौं, तू तिहिं तुरत बिगोइ ।
सुनि देवता बड़े, जग-पावन, तू पति या[3] कुल कोइ ।
पद पूजिहौं, बेगि यह बालक करि दै मोहिं बड़ोइ ।
दुतिया के ससि लौं बाढ़ै सिसु, देखै[4] जननि जसोइ ।
यह सुख सूरदास कैं नैननि, दिन-दिन दूनौ होइ[5] ॥ ५६ ॥
॥ ६७४ ॥

ीधर-अंगभंग

❀ राग बिलावल

‡ श्रीधर[6] बाँभन करम कसाई । कह्यौ कंस सौं बचन सुनाई ।
प्रभु, मैं तुम्हरौ आज्ञाकारी । नंद-सुवन कौं आवौं मारी ।
कंस कह्यौ, तुमतैं यह होइ । तुरत जाहु, करौ बिलँब न कोइ ।
श्रीधर नंद-भवन चलि आयौ । जसुदा उठि कै माथ नवायौ ।
करौ रसोई मैं बलि जाऊँ । तुम्हरे हेत जमुन-जल ल्याऊँ ।
यह कहि जसुदा जमुना गई । श्रीधर कही भली यह भई ।

---

* (ना) गूजरी । (रा) ाश्री ।

† यह पद (ल) में नहीं है ।

(१) कन्हैया हालरो हो—२, ६, १६ । कन्हैया हालरो हौं री—१४ । (२) अलसनि रोई—१, ११ । अंस तरो—२ । आसुन रो—३ । अलसनि रो—६, १७ । अलसनि मारी—१४ । लाल न रो—१६ । लालन रोई—१६ । (३) गोकुल—२, ३, १६, १८ । (४) देखै जो जिल जो—२ । देवै जननी हो—३ । जननी देखै सोइ—१६ । (५) हो—२, ३ ।

, (ना) जैतश्री ।

‡ यह पद (ल, का, के, पू) में नहीं है ।

(६) सिद्धर—१ । मीधर—२ ।

कागासुर-वध　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　राग सारंग

काग-रूप इक दनुज धरयौ ।

नृप-आयसु लै धरि माथे पर, हरषवंत उर गरब भरयौ ।
कितिक बात प्रभु तुम आयसु तैं, वह जानौ मो जात मरयौ[1] ।
इतनो कहि गोकुल उड़ि आयौ, आइ नंद-घर-छाज रह्यौ[2] ।
पलना पर पौढ़े हरि देखे, तुरत आइ नैननिहिं अरयौ ।
कंठ चाँपि बहु बार फिरायौ, गहि फटक्यौ[3], नृप पास परयौ ।
तुरत कंस पूछन तिहिं लाग्यौ, क्यौं आयौ, नहिं काज करयौ[4] ?
बीतैं जाम बोलि तब आयौ, सुनहु कंस, तव आइ सरयौ[5] ।
धरि अवतार महाबल कोऊ, एकहिं कर मेरौ गर्ब हरयौ ।
सूरदास प्रभु कंस-निकंदन, भक्त-हेत अवतार धरयौ ॥ ५६ ॥
॥ ६७७ ॥

* राग बिलावल

मथुरापति जिय अतिहिं डरान्यौ ।

सभा माँझ असुरनि के आगैं, सिर धुनि-धुनि पछितान्यौ ।
ब्रज-भीतर उपज्यौ मेरौ रिपु, मैं जानी यह बात ।
दिनहीं दिन वह बढ़त जात है, मोकौं करिहै घात ।
दनुज-सुता पूतना पठाई, छिनकहिं माँझ सँहारी ।
घौंच मरोरि, दियौ कागासुर मेरैं ढिग फटकारो ।

---

(१) करयौ—२, ३, १६ । (२) अरयौ—२, १६ । (३) पटक्यौ—१, ६, ९, १४, १६ । फेंक्यौ—३ । (४) सरयौ—२, ३, १६ । (५) गरयौ—१६ ।
* (ना) सारंग ।

काग-रूप इक दनुज धरयौ।
नृप-आयसु लै धरि माथे पर, हरषवंत उर गरब भरयौ।
कितिक बात प्रभु तुम आयसु तैं, वह जानौ मो जात मरयौ[1]।
इतनो कहि गोकुल उड़ि आयौ, आइ नंद-घर-छाज रह्यौ[2]।
पलना पर पौढ़े हरि देखे, तुरत आइ नैननिहिं अरयौ।
कंठ चाँपि बहु बार फिरायौ, गहि फटक्यौ[3], नृप पास परयौ।
तुरत कंस पूछन तिहिं लाग्यौ, क्यौं आयौ, नहिं काज करयौ[4]?
बीतैं जाम बोलि तब आयौ, सुनहु कंस, तव आइ सरयौ[5]।
धरि अवतार महाबल कोऊ, एकहिं कर मेरौ गर्ब हरयौ।
सूरदास प्रभु कंस-निकंदन, भक्त-हेत अवतार धरयौ ॥ ५६ ॥
॥ ६७७ ॥

* राग बिलावल

मथुरापति जिय अतिहिं डरान्यौ।
सभा माँझ असुरनि के आगैं, सिर धुनि-धुनि पछितान्यौ।
ब्रज-भीतर उपज्यौ मेरौ रिपु, मैं जानी यह बात।
दिनहीं दिन वह बढ़त जात है, मोकौं करिहै घात।
दनुज-सुता पूतना पठाई, छिनकहिं माँझ सँहारी।
घौंच मरोरि, दियौ कागासुर मेरैं ढिग फटकारो।

---

(1) करयौ—२, ३, १६। (2) अरयौ—२, १६। (3) पटक्यौ—१, ६, ६, १४, १६। फेंक्यौ—३। (4) सरयौ—२, ३, १६। (5) गरयौ—१६।
* (ना) सारंग।

किलकि किलकत हँसत, बाल-सोभा लसत, जानि यह[1] कपट, रिपु आयौ भोरैं।
नैंकु फटक्यौ लात, सबद भयौ आघात, गिरयौ भहरात सकटा सँहारयौ।
सूर प्रभु नँद-लाल, मारयौ दनुज ख्याल, मेटि जंजाल ब्रज-जन उबारयौ ॥६२॥
॥ ६८० ॥

* राग बिलावल

कर पग गहि, अँगुठा मुख मेलत।
प्रभु पौढ़े पालनैं अकेले, हरषि[2]-हरषि अपनैं रँग खेलत।
सिव सोचत, बिधि बुद्धि बिचारत, बट बाढ़यौ सागर-जल झेलत।
बिडरि चले घन प्रलय जानि कै, दिगपति दिग-दंतीनि सकेलत।
मुनि मन भीत भए, भुव कंपित, सेष सकुचि सहसौ फन पेलत।
उन[3] ब्रज-बासिनि बात न जानी, समुझे सूर ,सकट पग ठेलत ॥६३॥
॥ ६८१ ॥

* राग बिलावल

चरन गहे अँगुठा मुख मेलत।
नंद-घरनि गावति, हलरावति, पलना[4] पर हरि खेलत।
जे चरनारबिंद श्री-भूषन, उर तैं नैंकु न टारति।
देखौं धौं का रस चरननि मैं, मुख मेलत करि आरति।
जा चरनारबिंद के रस कौं सुर-मुनि करत बिषाद।
सो रस है मोहूँ कौं दुरलभ, तातैं लेत सवाद।

---

(१) रिपु गर्ब आयौ बहोरै—२।
* (ना) धनाश्री।
(२) हँसि-हँसि अपनी रुचि सौं खेलत—२। (३) सो सुख सूर भयौ सब गोकुल कान्ह सकल संकट पग ठेलत—३। सो सुख सूर भयौ सब गोकुल किलकत कान्ह सकट पग ठेलत—१४। सब बिधि सुख पावत ब्रजवासी सूर सकल संकट पग पेलत—१६।
* (ना) धनाश्री।
(४) पलना पर किलकत हरि खेलत—१, २, ३, ६, ११, १४।

किलकि किलकत हँसत, बाल-सोभा लसत, जानि यह[1] कपट, रिपु आयौ भोरैं।
नैंकु फटक्यौ लात, सबद भयौ आघात, गिर्‌यौ भहरात सकटा सँहार्‌यौ।
सूर प्रभु नँद-लाल, मार्‌यौ दनुज ख्याल, मेटि जंजाल ब्रज-जन उबार्‌यौ ॥६२॥

॥ ६८० ॥

* राग बिलावल

कर पग गहि, अँगुठा मुख मेलत।
प्रभु पौढ़े पालनैं अकेले, हरषि[2]-हरषि अपनैं रँग खेलत।
सिव सोचत, बिधि बुद्धि बिचारत, बट बाढ़्यौ सागर-जल झेलत।
बिडरि चले घन प्रलय जानि कै, दिगपति दिग-दंतीनि सकेलत।
मुनि मन भीत भए, भुव कंपित, सेष सकुचि सहसौ फन पेलत।
उन[3] ब्रज-बासिनि बात न जानी, समुझे सूर सकट पग ठेलत ॥६३॥

॥ ६८१ ॥

* राग बिलावल

चरन गहे अँगुठा मुख मेलत।
नंद-घरनि गावति, हलरावति, पलना[4] पर हरि खेलत।
जे चरनारबिंद श्री-भूषन, उर तैं नैंकु न टारति।
देखौं धौं का रस चरननि मैं, मुख मेलत करि आरति।
जा चरनारबिंद के रस कौं सुर-मुनि करत बिषाद।
सो रस है मोहूँ कौं दुरलभ, तातैं लेत सवाद।

---

(१) रिपु गर्ब आयौ बहोरै—२।
* (ना) धनाश्री।
(२) हँसि-हँसि अपनी रुचि सौं खेलत—२। (३) सो सुख सूर भयौ सब गोकुल कान्ह सकल संकट पग ठेलत—३। सो सुख सूर भयौ सब गोकुल किलकत कान्ह सकट पग ठेलत—१४। सब बिधि सुख पावत ब्रजवासी सूर सकल संकट पग पेलत—१६।
* (ना) धनाश्री।
(४) पलना पर किलकत हरि खेलत—१, २, ३, ६, ११, १४।

राग बिलावल

† अजिर प्रभातहिं स्याम कौं, पलिका पौढ़ाए ।
आप चली गृह-काज कौं, तहँ नंद बुलाए ।
निरखि हरषि मुख चूमि कै, मंदिर पग धारी ।
आतुर नँद आए तहाँ, जहँ ब्रह्म मुरारी ।
हँसे तात मुख हेरि कै, करि पग-चतुराई ।
किलकि झटकि उलटे परे, देवनि-मुनि-राई ।
सो छबि नंद निहारि कै, तहँ महरि बुलाई ।
निरखि चरित गोपाल के, सूरज बलि जाई ॥ ६६ ॥

॥ ६८४ ॥

राग रामकली

‡ हरषे नंद टेरत महरि ।
आइ सुत-मुख देखि आतुर, डारि दै दधि-डहरि[1] ।
मथति दधि जसुमति मथानी, धुनि रही घर-घहरि ।
स्रवन सुनति न महर-बातैं, जहाँ-तहँ गइ चहरि ।
यह सुनत तब मातु धाई, गिरे जाने झहरि ।
हँसत नँद-मुख देखि धीरज तब करयौ ज्यौ ठहरि ।
स्याम उलटे परे देखे, बढ़ी सोभा लहरि ।
सूर प्रभु कर सेज टेकत, कबहुँ टेकत ढहरि ॥६७॥

॥ ६८५ ॥

---

† यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जै) में है ।

‡ यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जै) में है ।

(१) दहरि—१ ।

राग बिलावल

† अजिर प्रभातहिं स्याम कौं, पलिका पौढ़ाए।
आप चली गृह-काज कौं, तहँ नंद बुलाए।
निरखि हरषि मुख चूमि कै, मंदिर पग धारी।
आतुर नँद आए तहाँ, जहँ ब्रह्म मुरारी।
हँसे तात मुख हेरि कै, करि पग-चतुराई।
किलकि झटकि उलटे परे, देवनि-मुनि-राई।
सो छबि नंद निहारि कै, तहँ महरि बुलाई।
निरखि चरित गोपाल के, सूरज बलि जाई॥ ६६॥

॥ ६८४॥

राग रामकली

‡ हरषे नंद टेरत महरि।
आइ सुत-मुख देखि आतुर, डारि दै दधि-डहरि[1]।
मथति दधि जसुमति मथानी, धुनि रही घर-घहरि।
स्रवन सुनति न महर-बातैं, जहाँ-तहँ गइ चहरि।
यह सुनत तब मातु धाई, गिरे जाने झहरि।
हँसत नँद-मुख देखि धीरज तब कर्‍यौ ज्यौ ठहरि।
स्याम उलटे परे देखे, बढ़ी सोभा लहरि।
सूर प्रभु कर सेज टेकत, कबहुँ टेकत ढहरि॥६७॥

॥ ६८५॥

---

† यह पद (वे, ल, शा, ..., जै) में है।

‡ यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जै) में है।

(१) टहरि—१।

राग रामकली

† जननी देखि छबि, बलि जाति ।
जैसैं निधनी धनहिं पाऐं, हरष दिन अरु राति ।
बाल-लीला निरखि हरषति, धन्य धनि ब्रजनारि ।
निरखि जननी-बदन किलकत, त्रिदस-पति दै तारि ।
धन्य नँद, धनि धन्य गोपी, धन्य ब्रज कौ बास ।
धन्य धरनी - करन - पावन - जन्म सूरजदास ॥ ७१ ॥
॥ ६८९ ॥

राग बिलावल

‡ जसुमति भाग-सुहागिनी, हरि कौं सुत जानै !
मुख-मुख जोरि बत्यावई, सिसुताई ठानै ।
मो निधनी कौ धन रहै, किलकत मन मोहन ।
बलिहारी छबि पर भई, ऐसी बिधि जोहन ।
लटकति बेसरि जननि की, इकटक चख लावै ।
फरकत बदन उठाइ कै, मनहीं मन भावै ।
महरि मुदित हित उर भरै, यह कहि, मैं वारी ।
नंद-सुवन के चरित पर, सूरज बलिहारी ॥ ७२ ॥
॥ ६९० ॥

राग आसावरी

§ गोद लिए हरि कौं नँदरानी, अस्तन पान करावति है ।
बार-बार रोहिनि कौं कहि-कहि, पलिका अजिर मँगावति है ।

---

† यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जै) में है ।

‡ यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जै) में है ।

§ यह पद (वे, ल, शा, का गो, जै) में है ।

राग रामकली

† जननी देखि छबि, बलि जाति।
जैसैं निधनी धनहिं पाएँ, हरष दिन अरु राति।
बाल-लीला निरखि हरषति, धन्य धनि ब्रजनारि।
निरखि जननी-बदन किलकत, त्रिदस-पति दै तारि।
धन्य नँद, धनि धन्य गोपी, धन्य ब्रज कौ बास।
धन्य धरनी - करन - पावन - जन्म सूरजदास ॥ ७१ ॥
॥ ६८९ ॥

राग बिलावल

‡ जसुमति भाग-सुहागिनी, हरि कौं सुत जानै !
मुख-मुख जोरि बत्यावई, सिसुताई ठानै।
मो निधनी कौ धन रहै, किलकत मन मोहन।
बलिहारी छबि पर भई, ऐसी बिधि जोहन।
लटकति बेसरि जननि की, इकटक चख लावै।
फरकत बदन उठाइ कै, मनहीं मन भावै।
महरि मुदित हित उर भरै, यह कहि, मैं वारी।
नंद-सुवन के चरित पर, सूरज बलिहारी ॥ ७२ ॥
॥ ६९० ॥

राग आसावरी

§ गोद लिए हरि कौं नँदरानी, अस्तन पान करावति है।
बार-बार रोहिनि कौं कहि-कहि, पलिका अजिर मँगावति है।

† यह पद (वे, ल, शा, का, जै) में है।

‡ यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जै) में है।

§ यह पद (वे, ल, शा, का गो, जै) में है।

छिन-छिन छुधित[1] जानि पय कारन, हँसि-हँसि[2] निकट बुलाऊँ।
जाकौ[3] सिव-बिरंचि-सनकादिक मुनिजन ध्यान न पाव।
सूरदास जसुमति[4] ता सुत-हित, मन अभिलाष बढ़ाव ॥७५॥

॥ ६६३ ॥

तृणावर्त-वध

* राग बिलावल

जसुमति मन अभिलाष करै।
कब मेरौ लाल घुटुरुवनि रेंगै, कब धरनी पग द्वैक धरै।
कब द्वै दाँत दूध के देखौं, कब तोतरैं मुख बचन झरै।
कब नंदहिं बाबा कहि बोलै, कब जननी कहि मोहिं ररै।
कब मेरौ अँचरा गहि मोहन, जोइ-सोइ कहि मोसौं झगरै।
कब धौं तनक-तनक कछु खैहै, अपने कर सौं मुखहिं भरै।
कब हँसि बात कहैगौ मोसौं, जा छबि तैं दुख दूरि हरै।
स्याम अकेले आँगन छाँड़े, आपु गई कछु काज घरै।
इहिं अंतर अँधवाह उठ्यौ इक, गरजत गगन सहित घहरै।
सूरदास ब्रज-लोग सुनत धुनि, जो जहँ-तहँ सब अतिहिं[5] डरै ॥७६॥

॥ ६६४ ॥

⊛ राग सूहौ

अति बिपरीत तृनावर्त आयौ।
बात-चक्र-मिस ब्रज ऊपर परि, नंद-पौरि कैं भीतर धायौ।

---

(१) आरि करै मनमोहन हँसि हँसि कंठ लगाऊँ—१४। (२) हौं हठि—१। (३) आगम निगम नेति कहि गायौ सिव उनमान न पायौ—१, ११। (४) बालक रस लीला मन अभिलाष बढ़ायौ—१, ११।

* (ना) केदारौ। (के, क)। सोरठ (कॉ, रा) नट।

(५) हहरै—६, १७।

⊛ (ना) नट।

छिन-छिन छुधित[1] जानि पय कारन, हँसि-हँसि[2] निकट बुलाऊँ।
जाकौ[3] सिव-बिरंचि-सनकादिक मुनिजन ध्यान न पाव।
सूरदास जसुमति[4] ता सुत-हित, मन अभिलाष बढ़ाव ॥७५॥
॥ ६६३ ॥

तृणावर्त-वध

* राग बिलावल

जसुमति मन अभिलाष करै।
कब मेरौ लाल घुटुरुवनि रेंगै, कब धरनी पग द्वैक धरै।
कब द्वै दाँत दूध के देखौं, कब तोतरैं मुख बचन झरै।
कब नंदहिं बाबा कहि बोलै, कब जननी कहि मोहिं ररै।
कब मेरौ अँचरा गहि मोहन, जोइ-सोइ कहि मोसौं झगरै।
कब धौं तनक-तनक कछु खैहै, अपने कर सौं मुखहिं भरै।
कब हँसि बात कहैगौ मोसौं, जा छबि तैं दुख दूरि हरै।
स्याम अकेले आँगन छाँड़े, आपु गई कछु काज घरै।
इहिं अंतर अँधवाह उठ्यौ इक, गरजत गगन सहित घहरै।
सूरदास ब्रज-लोग सुनत धुनि, जो जहँ-तहँ सब अतिहिं[5] डरै ॥७६॥
॥ ६६४ ॥

⊛ राग सूहौ

अति बिपरीत तृनावर्त आयौ।
बात-चक्र-मिस ब्रज ऊपर परि, नंद-पौरि कैं भीतर धायौ।

---

(१) आरि करै मनमोहन हँसि हँसि कंठ लगाऊँ—१४। (२) हौं हठि—१। (३) आगम निगम नेति कहि गायौ सिव उनमान न पायौ—१, ११। (४) बालक रस लीला मन अभिलाष बढ़ायौ—१, ११।

* (ना) केदारौ। (के, क)। सोरठ (कां, रा) नट।

(५) हहरै—६, १७।

⊛ (ना) नट।

लै आईं गृह चूमति-चाटति, घर-घर सबनि बधाई मानी।
देतिं अभूषन वारि-वारि सब, पीवतिं सूर वारि सब पानी ॥७८॥
॥ ६६६ ॥

* राग धनाश्री

उबर्‌यौ स्याम, महरि बड़भागी।
बहुत दूरि तैं आइ पर्‌यौ धर, धौं कहुँ चोट न लागी।
रोग लेउँ बलि जाउँ कन्हैया, यह कहि कंठ लगाइ[1]।
तुमही हौ ब्रज के जीवन-धन देखत नैन सिराइ[2]।
भली नहीं यह प्रकृति जसोदा, छाँड़ि अकेलौ जाति।
गृह कौ काज इनहुँ तैं प्यारौ, नैकहुँ नाहिं डराति।
भली भई अबकैं हरि बाँचे, अब तौ सुरति सम्हारि।
सूरदास खिझि कहति ग्वालिनी, मन मैं महरि बिचारि ॥७९॥
॥ ६६७ ॥

राग बिलावल

† अब हौं बलि[3] बलि जाउँ हरी।
निसिदिन रहति बिलोकति हरि-मुख, छाँड़ि सकति नहिं एक घरी।
हौं अपने गोपाल लड़ैहौं, भौन-चाड़ सब रहौ धरी।
पाऊँ कहाँ खिलावन कौ सुख, मैं दुखिया, दुख कोखि[4] जरी।
जा सुख कौं सिव-गौरि मनाई, तिय-व्रत-नेम अनेक करी।
सूर स्याम पाए पैंड़े मैं, ज्यौं पावै निधि रंक परी ॥८०॥
॥ ६६८ ॥

* (ना, पृ) कान्हरो। (के, क, र्का, रा) बिलावल।
(१) लगाए—२। लगायौ—३। (२) सिराए—२। सिरायौ—३।
† यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जौ) में है।
(३) स्याम—१, ११, १२। (४) कोटि भरी—१, ११, १२।

लै आईं गृह चूमति-चाटति, घर-घर सबनि बधाई मानी।
देतिं अभूषन वारि-वारि सब, पीवतिं सूर वारि सब पानी ॥७८॥

॥ ६६६ ॥

* राग धनाश्री

उबर्‌यौ स्याम, महरि बड़भागी।
बहुत दूरि तैं आइ पर्‌यौ धर, धौं कहुँ चोट न लागी।
रोग लेउँ बलि जाउँ कन्हैया, यह कहि कंठ लगाइ[1]।
तुमही हौ ब्रज के जीवन-धन देखत नैन सिराइ[2]।
भली नहीं यह प्रकृति जसोदा, छाँड़ि अकेलौ जाति।
गृह कौ काज इनहुँ तैं प्यारौ, नैकहुँ नाहिं डराति।
भली भई अबकैं हरि बाँचे, अब तौ सुरति सम्हारि।
सूरदास खिझि कहति ग्वालिनी, मन मैं महरि बिचारि ॥७९॥

॥ ६६७ ॥

राग बिलावल

† अब हौं बलि[3] बलि जाउँ हरी।
निसिदिन रहति बिलोकति हरि-मुख, छाँड़ि सकति नहिं एक घरी।
हौं अपने गोपाल लड़ैहौं, भौन-चाड़ सब रहौ धरी।
पाऊँ कहाँ खिलावन कौ सुख, मैं दुखिया, दुख कोखि[4] जरी।
जा सुख कौं सिव-गौरि मनाई, तिय-ब्रत-नेम अनेक करी।
सूर स्याम पाए पैंड़े मैं, ज्यौं पावै निधि रंक परी ॥८०॥

॥ ६६८ ॥

---

* (ना, पृ) कान्हरो। (के, क, र्का, रा) बिलावल।

(१) लगाए—२। लगायौ—३। (२) सिराए—२। सिरायौ—३।

† यह पद (वे, ल, शा, का, गो, जौ) में है।

(३) स्याम—१, ११, १५।

(४) कोटि भरी—१, ११, १५।

घर-घर हाथ दिवावति डोलति, बाँधति गरैं बघनियाँ।
सूर स्याम की अदभुत लीला नहिं जानत मुनिजनियाँ ॥८३॥
॥ ७०१ ॥

रागिनी श्रीहठी

† जननी बलि जाइ हालरु हालरौ गोपाल।
दधिहिं बिलोइ सदमाखन राख्यौ, मिश्री सानि चटावै नँदलाल।
कंचन खंभ, मयारि, मरुवा-डाड़ी, खचि हीरा बिच लाल-प्रवाल।
रेसम बनाइ नव रतन पालनौ, लटकन बहुत पिरोजा-लाल।
मोतिनि झालरि नाना भाँति खिलौना, रचे बिस्वकर्मा सुतहार।
देखि-देखि किलकत दँतियाँ द्वै राजत क्रीड़त बिबिध बिहार।
कठुला कंठ बज्र केहरि-नख, मसि-बिंदुका सु मृग-मद भाल।
देखत देत असीस नारि-नर, चिरजीवौ जसुदा तेरौ लाल।
सुर नर मुनि कौतूहल फूले, झूलत देखत नंद कुमार।
हरषत सूर सुमन बरषत नभ, धुनि छाई है जै-जैकार ॥८४॥
॥ ७०२ ॥

नाम-करण

* राग बिलावल

महर-भवन रिषिराज गए।
चरन धोइ चरनोदक लीन्हौ, अरघासन करि हेत दए।
धन्य आज बड़भाग हमारे, रिषि आए, अति कृपा करी।
हम कहा धनि, धनि नंद-जसोदा, धनि यह ब्रज जहँ प्रगट हरी।

---

† यह पद केवल (वे, गो, जौ) में है।

* (ना) देवगधार।

घर-घर हाथ दिवावति डोलति, बाँधति गरैं बघनियाँ।
सूर स्याम की अदभुत लीला नहिँ जानत मुनिजनियाँ ॥८३॥
॥ ७०१ ॥

रागिनी श्रीहठी

† जननी बलि जाइ हालरु हालरौ गोपाल।
दधिहिँ बिलोइ सदमाखन राख्यौ, मिश्री सानि चटावै नँदलाल।
कंचन खंभ, मयारि, मरुवा-डाड़ी, खचि हीरा बिच लाल-प्रवाल।
रेसम बनाइ नव रतन पालनौ, लटकन बहुत पिरोजा-लाल।
मोतिनि झालरि नाना भाँति खिलौना, रचे बिस्वकर्मा सुतहार।
देखि-देखि किलकत दँतियाँ द्वै राजत क्रीड़त बिबिध बिहार।
कठुला कंठ बज्र केहरि-नख, मसि-बिंदुका सु मृग-मद भाल।
देखत देत असीस नारि-नर, चिरजीवौ जसुदा तेरौ लाल।
सुर नर मुनि कौतूहल फूले, झूलत देखत नंद कुमार।
हरषत सूर सुमन बरषत नभ, धुनि छाई है जै-जैकार ॥८४॥
॥ ७०२ ॥

नाम-करण

* राग बिलावल

महर-भवन रिषिराज गए।
चरन धोइ चरनोदक लीन्हौ, अरघासन करि हेत दए।
धन्य आज बड़भाग हमारे, रिषि आए, अति कृपा करी।
हम कहा धनि, धनि नंद-जसोदा, धनि यह ब्रज जहँ प्रगट हरी।

† यह पद केवल (वे, गो, जौ) में है।

* (ना) देवगधार।

* राग बिलावल

धन्य जसोदा भाग तिहारौ, जिनि ऐसौ सुत जायौ।
जाकैं दरस-परस सुख तन-मन, कुल[1] कौ तिमिर नसायौ।
बिप्र-सुजन-चारन-बंदीजन, सकल नंद-गृह आए।
नूतन[2] सुभग दूब-हरदी-दधि, हरषित[3] सीस बँधाए।
गर्ग निरूपि कह्यौ सब लच्छन, अबिगत हैं अबिनासी।
सूरदास प्रभु[4] के गुन सुनि-सुनि, आनंदे ब्रजबासी ॥ ८७ ॥
॥ ७०५ ॥

अन्नप्राशन

* राग बिलावल

कान्ह कुँवर की करहु पासनी, कछु दिन घटि षट मास गए।
नंद महर यह सुनि पुलकित जिय, हरि अनप्रासन जोग भए।
बिप्र बुलाइ नाम लै बूझ्यो, रासि सोधि इक सुदिन धर्यौ।
आछौ दिन सुनि महरि जसोदा, सखिनि बोलि सुभ गान कर्यौ।
जुवति महरि कौं गारो गावतिं, और महर कौ नाम लिए।
ब्रज-घर-घर आनंद बढ़्यौ अति, प्रेम पुलक न समात हिए।
जाकौं नेति-नेति स्रुति गावत, ध्यावत सुर-मुनि ध्यान धरे।
सूरदास तिहिं कौं ब्रज-बनिता, झकझोरतिं उर अंक भरे ॥ ८८ ॥
॥ ७०६ ॥

× राग सारंग

आजु कान्ह करिहैं अनप्रासन।
मनि-कंचन के थार भराए, भाँति-भाँति के बासन।

---

* (ना) बिहाग। (के, पू) गौरी। (का, काँ, रा) आसावरी। (1) गोकुल—२, ३, १८, १९। (2) करि तन सुभग दूब हरदी दधि हरषि असीस बँधायौ—६। (3) हरषि असीस बधाए—६, १७। (4) सुनतै जस हरिके—३। * (ना) गूजरी। × (ना) जैतश्री।

* राग बिलावल

धन्य जसोदा भाग तिहारौ, जिनि ऐसौ सुत जायौ ।
जाकैं दरस-परस सुख तन-मन, कुल[1] कौ तिमिर नसायौ ।
बिप्र-सुजन-चारन-बंदीजन, सकल नंद-गृह आए ।
नूतन[2] सुभग दूब-हरदी-दधि, हरषित[3] सीस बँधाए ।
गर्ग निरूपि कह्यौ सब लच्छन, अबिगत हैं अबिनासी ।
सूरदास प्रभु[4] के गुन सुनि-सुनि, आनंदे ब्रजबासी ॥ ८७ ॥

॥ ७०५ ॥

अन्नप्राशन

⊛ राग बिलावल

कान्ह कुँवर की करहु पासनी, कछु दिन घटि षट मास गए ।
नंद महर यह सुनि पुलकित जिय, हरि अनप्रासन जोग भए ।
बिप्र बुलाइ नाम लै बूझ्यौ, रासि सोधि इक सुदिन धर्‌यौ ।
आछौ दिन सुनि महरि जसोदा, सखिनि बोलि सुभ गान कर्‌यौ ।
जुवति महरि कौं गारी गावतिं, और महर कौ नाम लिए ।
ब्रज-घर-घर आनंद बढ़्यौ अति, प्रेम पुलक न समात हिए ।
जाकौं नेति-नेति स्रुति गावत, ध्यावत सुर-मुनि ध्यान धरे ।
सूरदास तिहिं कौं ब्रज-बनिता, झकझोरतिं उर अंक भरे ॥ ८८ ॥

॥ ७०६ ॥

× राग सारंग

आजु कान्ह करिहैं अनप्रासन ।
मनि-कंचन के थार भराए, भाँति-भाँति के बासन ।

---

* (ना) बिहाग । (के, पू) गौरी । (का, काँ, रा) आसावरी । ① गोकुल—२, ३, १८, १६ । ② करि तन सुभग दूब हरदी दधि हरषि असीस बँधायौ—६ । ③ हरषि असीस बधाए—६, १७ । ④ सुनतै जस हरिके—१ ।
⊛ (ना) गूजरी ।
× (ना) जैतश्री ।

इहिँ बिधि सुख बिलसत ब्रजबासी, धनि गोकुल नर-नारी।
नंद-सुवन की या छबि ऊपर, सूरदास बलिहारी ॥ ८६ ॥
॥ ७०७ ॥

* राग सारंग

† हरि कौ मुख माइ, मोहिँ अनुदिन अति भावै।
चितवत[1] चित नैननि की मति-गति बिसरावै।
ललना[2] लै-लै उछंग अधिक लोभ लागैँ।
निरखतिँ निंदति निमेष करत ओट आगैँ।
सोभित सु-कपोल-अधर, अलप-अलप दसना।
किलकि[3]-किलकि बैन कहत, मोहन मृदु रसना।
नासा, लोचन बिसाल, संतत सुखकारी।
सूरदास धन्य भाग, देखतिँ ब्रजनारी ॥ ९० ॥
॥ ७०८ ॥

** राग सारंग

ललन हौं या छबि ऊपर वारी।
बाल गोपाल लगौ इन नैननि, रोग-बलाइ तुम्हारी।
लट[4] लटकनि, मोहन मसि-बिँदुका-तिलक भाल सुखकारी।
मनौ कमल-दल[5] सावक पेखत, उड़त मधुप छबि न्यारी।

---

* (ना) रामकली।

† यह पद (वृ, कां, रा, श्या) में नहीं है।

(१) चितवत ब्रज जुवतिनि के सब्र कृत बिसरावै—२, ३, ६, १४। (२) बार-बार लै उछंग रहत लोभ लागे—३, १४। (३) किलकत बिहँसत सुदेश मोहन मृदु रसना—३, १४।

** (ना) ईमन। (का, के, गो, जै, कां, पू, रा) धनाश्री।

(४) कुटिल अलक मोहन मुख बिहँसन भृकुटी बिकट नियारी—३। (५) अलि सावक पंगति—१, ६, ९, ११, १५, १७। दल सावक पंगति—३, १६, १८।

इहिँ बिधि सुख बिलसत ब्रजबासी, धनि गोकुल नर-नारी।
नंद-सुवन की या छबि ऊपर, सूरदास बलिहारी॥ ८६ ॥
॥७०७॥

* राग सारंग

† हरि कौ मुख माइ, मोहिँ अनुदिन अति भावै।
चितवत[1] चित नैननि की मति-गति बिसरावै।
ललना[2] लै-लै उछंग अधिक लोभ लागैँ।
निरखतिँ निंदति निमेष करत ओट आगैँ।
सोभित सु-कपोल-अधर, अलप-अलप दसना।
किलकि[3]-किलकि बैन कहत, मोहन मृदु रसना।
नासा, लोचन बिसाल, संतत सुखकारी।
सूरदास धन्य भाग, देखतिँ ब्रजनारी॥ ९० ॥
॥ ७०८ ॥

⊛ राग सारंग

ललन हौँ या छबि ऊपर वारी।
बाल गोपाल लगौ इन नैननि, रोग-बलाइ तुम्हारी।
लट[4] लटकनि, मोहन मसि-बिँदुका-तिलक भाल सुखकारी।
मनौ कमल-दल[5] सावक पेखत, उड़त मधुप छबि न्यारी।

---

* (ना) रामकली।
† यह पद (वृ, कां, रा, श्या) में नहीं है।
(१) चितवत ब्रज जुवतिनि के सब कृत बिसरावै—२, ३, ६, १४। (२) बार-बार लै उछंग रहत लोभ लागे—३, १४। (३) किलकत बिहँसत सुदेश मोहन मृदु रसना—३, १४।
⊛ (ना) ईमन। (का, के, गो, जै, कां, पू, रा) धनाश्री।
(४) कुटिल अलक मोहन मुख बिहँसन भृकुटी बिकट नियारी—३। (५) अलि सावक पंगति—१, ६, ६, ११, १२, १७। दल सावक पंगति—३, १६, १८।

नव-तन-चंद्र-रेख-मधि राजत, सुरगुरु-सुक्र-उदोत परसपर ।
लोचन[1] लोल कपोल ललित अति, नासा कौ मुकता रदछद पर ।
सूर कहा न्यौछावर करियै अपने लाल ललित लरखर पर ॥ ६३ ॥

॥ ७११ ॥

वर्ष-गाँठ

* राग बिलावल

आजु भोर तमचुर के रोल ।
॥ गोकुल मैं आनंद होत हैं, मंगल-धुनि महराने[2] टोल ।
फूले फिरत नंद अति सुख भयौ, हरषि मँगावत फूल-तमोल ।
फूली फिरति जसोदा तन-मन, उबटि कान्ह अन्हवाइ अमोल ।
तनक बदन, दोउ तनक-तनक कर, तनक चरन, पोंछति पट झोल ।
कान्ह गरैं सोहति मनि-माला, अंग अभूषन अँगुरिनि गोल ।
सिर चौतनी, डिठौना दीन्हौ, आँखि आँजि पहिराइ निचोल ।
स्याम[3] करत माता सौं झगरौ, अटपटात कलबल करि बोल ।
दोउ कपोल गहि कै मुख चूमति, बरष-दिवस कहि करति कलोल ।
सूर स्याम ब्रज-जन-मन-मोहन-बरष-गाँठि कौ डोरा खोल ॥ ६४ ॥

॥ ७१२ ॥

⊛ राग धनाश्री

† अरी, मेरे लालन की आजु बरष-गाँठि, सबै
सखिनि कौं बुलाइ मँगल-गान करावौ ।

---

(१) मैं या छबि पर तन मन वारे तनक घुटुरुवहु (होत है) भू पर—६, १४।
* (ना) रामकली।
|| (के) मे इस पद की कोई टेक नहीं है। दूसरे चरण के स्थान मे यह पंक्ति है—आजु भोरही तमचुर के सुर मंगल धुनि महराने टोल।
(२) घहराने ढोल—१४।
(३) करत आरि मैया सौं झगरत बोलत कछुक तोतरे बोल—१७।
; (क) बिलावल।
† यह पद (ना, शा, वृ, कां, रा, श्या) मे नही है। इसका पाठ सभी प्राप्त प्रतियों मे बडा अस्तव्यस्त है। केवल (के) और (पू) का पाठ कुछ ठीक ज्ञात होता है। अतः इन्हीं का पाठ किंचित् संशोधन करके इस संस्करण मे दिया गया है।

नव-तन-चंद्र-रेख-मधि राजत, सुरगुरु-सुक्र-उदोत परसपर ।
लोचन[1] लोल कपोल ललित अति, नासा कौ मुकता रदछद पर ।
सूर कहा न्यौछावर करियै अपने लाल ललित लरखर पर ॥ ६३ ॥
॥ ७११ ॥

वर्ष-गाँठ

* राग बिलावल

आजु भोर तमचुर के रोल ।
|| गोकुल मैं आनंद होत हैं, मंगल-धुनि महराने[2] टोल ।
फूले फिरत नंद अति सुख भयौ, हरषि मँगावत फूल-तमोल ।
फूली फिरति जसोदा तन-मन, उबटि कान्ह अन्हवाइ अमोल ।
तनक बदन, दोउ तनक-तनक कर, तनक चरन, पोंछति पट झोल ।
कान्ह गरैं सोहति मनि-माला, अंग अभूषन अँगुरिनि गोल ।
सिर चौतनी, डिठौना दीन्हौ, आँखि आँजि पहिराइ निचोल ।
स्याम[3] करत माता सौं झगरौ, अटपटात कलबल करि बोल ।
दोउ कपोल गहि कै मुख चूमति, बरष-दिवस कहि करति कलोल ।
सूर स्याम ब्रज-जन-मन-मोहन-बरष-गाँठि कौ डोरा खोल ॥ ६४ ॥
॥ ७१२ ॥

⊛ राग धनाश्री

† अरी, मेरे लालन की आजु बरष-गाँठि, सबै
सखिनि कौं बुलाइ मँगल-गान करावौ ।

---

(१) मैं या छबि पर तन मन वारे तनक घुटुरुवह्नु (होत है) भू पर—६, १४ ।

* (ना) रामकली ।

|| (के) में इस पद की कोई टेक नहीं है । दूसरे चरण के स्थान में यह पंक्ति है— आजु भोरही तमचुर के सुर मंगल धुनि महराने टोल ।

(२) घहराने ढोल—१४ ।

(३) करत आरि मैया सौं झगरत बोलत कछुक तोतरे बोल—१७ ।

⊛ (क) बिलावल ।

† यह पद (ना, शा, वृ, कां, रा, श्या) में नही है । इसका पाठ सभी प्राप्त प्रतियों में बडा अस्तव्यस्त है । केवल (के) और (पू) का पाठ कुछ ठीक ज्ञात होता है । अतः इन्हीं का पाठ किंचित् संशोधन करके इस संस्करण में दिया गया है ।

कंचन-मनि-जटित-थार, रोचन, दधि, फूल-डार, मिलिबे की तरसनि।
प्रभु बरष-गाँठि जोरति, वा छबि पर तृन तोरति, सूर अरस परसनि ॥६६॥
॥ ७१४ ॥

घुटुरुवों चलना

* राग धनाश्री

खेलत नँद[1]-आँगन गोबिंद।
निरखि-निरखि जसुमति सुख पावति, बदन मनोहर इंदु[2]।
कटि किंकिनी चंद्रिका[3] मानिक, लटकन लटकत भाल।
परम सुदेस कंठ केहरि-नख, बिच-बिच बज्र प्रवाल।
कर पहुँची, पाइनि मैं नूपुर, तन राजत[4] पट पीत।
घुटुरुनि चलत, अजिर[5] महँ बिहरत, मुख मंडित नवनीत।
सूर बिचित्र चरित्र स्याम के रसना कहत न आवैं।
बाल दसा अवलोकि सकल मुनि, जोग बिरति बिसरावैं ॥ ६७ ॥
॥ ७१५ ॥

राग आसावरी

घुटुरुनि चलत स्याम मनि-आँगन, मातु-पिता दोउ देखत री।
कबहुँक किलकि तात-मुख हेरत, कबहुँ मातु[6]-मुख पेखत री।
लटकन लटकत ललित भाल पर, काजर-बिंदु भ्रुव-ऊपर री।
यह सोभा नैननि भरि देखैं, नहिँ उपमा तिहुँ भू पर री।
कबहुँक दौरि घुटुरुवनि लपकत[7], गिरत, उठत पुनि धावै री।

---

* (ना) अहीरी। (का, के, क) बिलावल। (कां, रा, श्या) कान्हरा।
(१) ब्रज—२, १६। गृह—१७। (२) चंद—१, ३, ११, १५। (३) कंठ मनि की दुति लट मुक्ता भरि भाल—१। चंद्रमनि मानिक अरु मुकतनि की माल—२। चंद्रमणि की लट मुक्तावली भलि भाल—१४। (४) रजित रज पीत—१, ६, ११, १५। (५) बच्छ सँग बिहरत—२, १६, १८, १६।

"(रा) बिलावल।
(६) जननि—१, ३, ६, ६, ११, १४, १६। (७) लटकत—१, ३, ६, ११, १४, १५, १७। रै गत—२, १६, १८, १६।

कंचन-मनि-जटित-थार, रोचन, दधि, फूल-डार, मिलिबे की तरसनि।
प्रभु बरष-गाँठि जोरति, वा छबि पर तृन तोरति, सूर अरस परसनि ॥६६॥
॥ ७१४ ॥

घुटुरुवोँ चलना

* राग धनाश्री

खेलत नँद[1]-आँगन गोबिंद।
निरखि-निरखि जसुमति सुख पावति, बदन मनोहर इंदु[2]।
कटि किंकिनी चंद्रिका[3] मानिक, लटकन लटकत भाल।
परम सुदेस कंठ केहरि-नख, बिच-बिच बज्र प्रवाल।
कर पहुँची, पाइनि मैं नूपुर, तन राजत[4] पट पीत।
घुटुरुनि चलत, अजिर[5] महँ बिहरत, मुख मंडित नवनीत।
सूर बिचित्र चरित्र स्याम के रसना कहत न आवैं।
बाल दसा अवलोकि सकल मुनि, जोग बिरति बिसरावैं ॥ ६७ ॥
॥ ७१५ ॥

राग आसावरी

घुटुरुनि चलत स्याम मनि-आँगन, मातु-पिता दोउ देखत री।
कबहुँक किलकि तात-मुख हेरत, कबहुँ मातु[6]-मुख पेखत री।
लटकन लटकत ललित भाल पर, काजर-बिंदु भ्रुव-ऊपर री।
यह सोभा नैननि भरि देखैं, नहिं उपमा तिहुँ भू पर री।
कबहुँक दौरि घुटुरुवनि लपकत[7], गिरत, उठत पुनि धावै री।

---

* (ना) अहीरी। (का, के, क) बिलावल। (कां, रा, श्या) कान्हरा।
(१) ब्रज—२, १६। गृह—१७। (२) चंद—१, ३, ११, १५। (३) कंठ मनि की दुति लट मुक्ता भरि भाल—१। चंद्रमनि मानिक अरु मुकतनि की माल—२। चंद्रमणि की लट मुक्तावली भलि भाल—१४। (४) रजित रज पीत—१, ६, ११, १५। (५) बच्छ सँग बिहरत—२, १६, १८, १६।

" (रा) बिलावल।
(६) जननि—१, ३, ६, ६, ११, १४, १६। (७) लटकत—१, ३, ६, ११, १४, १५, १७। रैंगत—२, १६, १८, १६।

राग ललित

† (माइ) बिहरत गोपाल राइ, मनिमय रचे अंगनाइ
लरकत पररिंगनाइ, घूटुरूनि डोलै।
निरखि निरखि अपनै प्रति-बिंब, हँसत किलकत औ,
पाछैं चितै फेरि-फेरि मैया-मैया बोलै।
ज्यौं अलिगन सहित बिमल जलज जलहिं धाइ रहैं,
कुटिल अलक बदन की छबि, अवनी परि लोलै।
सूरदास छबि निहारि, थकित रहीं घोष नारि
तन-मन-धन देतिं वारि, बार-बार ओलै॥ १०१॥
॥ ७१६॥

* राग बिलावल

बाल बिनोद खरो जिय भावत।
मुख प्रतिबिंब पकरिबे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत।
अखिल[1] ब्रह्मंड-खंड की महिमा, सिसुता माहिं दुरावत।
सब्द जोरि[2] बोल्यौ चाहत हैं, प्रगट बचन नहिं आवत।
कमल-नैन माखन माँगत हैं करि[3]-करि सैन बतावत।
सूरदास[4] स्वामी सुख-सागर, जसुमति-प्रीति बढ़ावत॥ १०२॥
॥ ७२०॥

---

† यह पद केवल (वे, स, ल, शा, गो, जै) में है। इनमें इसका पाठ ऐसा भ्रष्ट है कि न तो छंद ही ठीक रह गया है और न अर्थ ही। अंतिम चरण से छंद का कुछ पता लगाकर इसकी मात्राएँ समान कर दी गई हैं।

* (ना) ईमन। (क) आसावरी। (कां) धनाश्री। (रा) सारंग।

(१) छिनक माँझ त्रिभुवन की लीला—१, ६, ११। कृत ब्रह्मंड—२। (२) एक—१, ६, ९, ११। (३) ग्वालिनि—१, २, ६, ११, १४, १९। (४) सूर स्याम सु सनेह मनोहर—१, ६, ११। सूरदास स्वामी ब्रजबासी नैननि कौ फल पावत—२, १६, १८, १९।

राग ललित

† (माई) बिहरत गोपाल राइ, मनिमय रचे अंगनाइ
　　लरकत पररिंगनाइ, घूटुरूनि डोलै।
निरखि निरखि अपनौ प्रति-बिंब, हँसत किलकत औ,
　　पाछैं चितै फेरि-फेरि मैया-मैया बोलै।
ज्यौं अलिगन सहित बिमल जलज जलहिं धाइ रहै,
　　कुटिल अलक बदन की छबि, अवनी परि लोलै।
सूरदास छबि निहारि, थकित रहीं घोष नारि
　　तन-मन-धन देतिं वारि, बार-बार ओलै॥ १०१॥
॥ ७१६॥

* राग बिलावल

बाल बिनोद खरो जिय भावत।
मुख प्रतिबिंब पकरिबे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत।
अखिल[1] ब्रह्मंड-खंड की महिमा, सिसुता माहिं दुरावत।
सब्द जोरि[2] बोल्यौ चाहत हैं, प्रगट बचन नहिं आवत।
कमल-नैन माखन माँगत हैं करि[3]-करि सैन बतावत।
सूरदास[4] स्वामी सुख-सागर, जसुमति-प्रीति बढ़ावत॥ १०२॥
॥ ७२०॥

---

† यह पद केवल (वे, स, ल, शा, गो, जै) में है। इनमें इसका पाठ ऐसा भ्रष्ट है कि न तो छंद ही ठीक रह गया है और न अर्थ ही। अंतिम चरण से छंद का कुछ पता लगाकर इसकी मात्राएँ समान कर दी गई हैं।

* (ना) ईमन। (क) आसावरी। (कां) धनाश्री। (रा) सारंग।

(1) छिनक माँझ त्रिभुवन की लीला—१, ६, ११। कृत ब्रह्मंड—२। (2) एक—१, ६, ६, ११। (3) ग्वालिनि—१, २, ६, ११, १५, १६। (4) सूर स्याम सु सनेह मनोहर—१, ६, ११। सूरदास स्वामी ब्रजवासी नैननि कौ फल पावत—२, १६, १८, १६।

सुभग चिबुक, द्विज-अधर-नासिका, स्रवन-कपोल मोहिँ सुठि भाए।
भ्रुव सुंदर, करुना-रस-पूरन लोचन मनहु जुगल जल-जाए।
भाल बिसाल ललित लटकन मनि, बाल-दसा के चिकुर सुहाए।
मानौ गुरु-सनि-कुज आगैँ करि, ससिहिँ मिलन तम के गन आए।
उपमा एक अभूत भई तब, जब जननी पट पीट उढ़ाए।
नाल जलद पर[1] उडुगन निरखत, तजि सुभाव मनु तड़ित छपाए।
अंग-अंग-प्रति मार-निकर मिलि, छबि-समूह लै-लै मनु छाए।
सूरदास सो क्यौँ करि बरनै, जो छबि निगम नेति करि गाए ॥ १०४ ॥

॥ ७२२ ॥

* राग धनाश्री

हौँ बलि जाउँ छबीले लाल की।

धूसर धूरि घुटुरुवनि रेँगनि, बोलनि बचन रसाल की।
छिटकि रहीँ चहुँ दिसि जु लटुरियाँ, लटकन-लटकनि भाल की।
मोतिनि सहित नासिका नथुनी, कंठ-कमल-दल-माल की।
कछुक हाथ, कछु मुख माखन लै, चितवनि नैन बिसाल की।
सूरदास प्रभु-प्रेम-मगन भईँ, ढिग न तजनि ब्रजबाल की ॥ १०५ ॥

॥ ७२३ ॥

राग कान्हरौ

† आदर सहित बिलोकि स्याम-मुख, नंद अनंद-रूप लिए कनियाँ।

---

(१) ऊपर जौ निरखत—३, ६, ११, १४। ऊपर यौं निरखत—६।

* (ना) अड़ानो। (के, क, पू) बिलावल। (कॉ, रा, श्या) सारंग।

† यह पद (ना, वृ, कॉ, रा, श्या) में नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास की गीतावली में भी यह पद किंचित् शाब्दिक हेर-फेर से आया है। संवत् १७५३ की प्रति में भी, जो सूरसागर की प्राप्त प्रतियों में सबसे प्राचीन है, यह पद प्राप्त है। (तुलसी-ग्रंथावली, नागरी-प्रचारिणी सभा, पद ३१, पृष्ठ २६२)।

सुभग चिबुक, द्विज-अधर-नासिका, स्रवन-कपोल मोहिँ सुठि भाए।
भ्रुव सुंदर, करुना-रस-पूरन लोचन मनहु जुगल जल-जाए।
भाल बिसाल ललित लटकन मनि, बाल-दसा के चिकुर सुहाए।
मानौ गुरु-सनि-कुज आगैँ करि, ससिहिँ मिलन तम के गन आए।
उपमा एक अभूत भई तब, जब जननी पट पीट उढ़ाए।
नाल जलद पर[1] उडुगन निरखत, तजि सुभाव मनु तड़ित छपाए।
अंग-अंग-प्रति मार-निकर मिलि, छबि-समूह लै-लै मनु छाए।
सूरदास सो क्यौं करि बरनै, जो छबि निगम नेति करि गाए॥ १०४॥

॥ ७२२॥

* राग धनाश्री

हौं बलि जाउँ छबीले लाल की।

धूसर धूरि घुटुरुवनि रेँगनि, बोलनि बचन रसाल की।
छिटकि रहीँ चहुँ दिसि जु लटुरियाँ, लटकन-लटकनि भाल की।
मोतिनि सहित नासिका नथुनी, कंठ-कमल-दल-माल की।
कछुक हाथ, कछु मुख माखन लै, चितवनि नैन बिसाल की।
सूरदास प्रभु-प्रेम-मगन भईँ, ढिग न तजनि ब्रजबाल की॥ १०५॥

॥ ७२३॥

राग कान्हरौ

† आदर सहित बिलोकि स्याम-मुख, नंद अनंद-रूप लिए कनियाँ।

---

(१) ऊपर जै निरखत—३, ६, ११, १४। ऊपर यैं निरखत—६।

* (ना) अड़ानो। (के, क, पू) बिलावल। (कॉं, रा, श्या) सारंग।

† यह पद (ना, वृ, कॉं, रा, श्या) मेँ नहीँ है। गोस्वामी तुलसीदास की गीतावली मेँ भी यह पद किंचित् शाब्दिक हेर-फेर से आया है। संवत् १७५३ की प्रति मेँ भी, जो सूरसागर की प्राप्त प्रतियोँ मेँ सबसे प्राचीन है, यह पद प्राप्त है। (तुलसी-ग्रंथावली, नागरी-प्रचारिणी सभा, पद ३१, पृष्ठ २६२)।

* राग धनाश्री

कहाँ लौं बरनौं सुंदरताई ?

खेलत कुँवर कनक-आँगन मैं नैन निरखि छबि[1] पाई ।
कुलही लसति सिर स्यामसुंदर[2] कैं, बहु बिधि सुरँग[3] बनाई ।
मानौ नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढ़ाई ।
अति सुदेस मृदु हरत चिकुर मन मोहन-मुख बगराई ।
मानौ प्रगट कंज पर मंजुल अलि-अवली फिरि आई ।
नील, सेत, अरु पीत, लाल मनि लटकन भाल रुलाई[4] ।
सनि, गुरु-असुर, देवगुरु मिलि मनु भौम सहित समुदाई ।
दूध-दंत-दुति कहि[5] न जाति कछु अदभुत उपमा पाई ।
किलकत-हँसत दुरति प्रगटति मनु, घन मैं बिज्जु छटाई[6] ।
खंडित बचन देत पूरन सुख अलप-अलप जलपाई ।
घुटुरुनि चलत रेनु-तन-मंडित, सूरदास बलि जाई ॥ १०८ ॥ ७२६ ॥

राग नटनारायन

† हरि जू की बाल-छबि कहौं बरनि ।

सकल सुख की सींव, कोटि-मनोज-सोभा-हरनि ।
भुज भुजंग, सरोज नैननि, बदन बिधु जित लरनि ।
रहे बिवरनि, सलिल, नभ, उपमा अपर दुरि[7] डरनि ।

---

* (ना) बिहागरौ । (कॉं, रा, श्या) नट ।

(१) छबि छाई—१, ११ । सुखदाई—२, ६, १६ । (२) सुभग अति—१, ३, ६, ११, १५ । (३) नगनि—२, १६ । (४) रुनाई—१, ११ । डराई - ६, १७ । (५) देत अधिक छबि अद्भुत इह उपमाई—६, १७ । (६) छपाई—१ । लताई—२, ६, १७, १६ ।

† यह पद (ना, वृ, कॉं, श्या) में नहीं है । यह भी गोस्वामीजी की गीतावली में 'रघुबर बाल-छबि कहौं बरनि' शीर्षक पद के रूप में मिलता है । बहुत थोड़ा अंतर, जो अनिवार्य था, पाया जाता है । (गीतावली ना० प्र० स०, पद २४)

(७) दुति—१, ३, ६, ११, १४, १५, १७ ।

* राग धनाश्री

कहाँ लौं बरनौं सुंदरताई ?

खेलत कुँवर कनक-आँगन मैं नैन निरखि छबि[1] पाई ।
कुलही लसति सिर स्यामसुँदर[2] कैं, बहु बिधि सुरँग[3] बनाई ।
मानौ नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढ़ाई ।
अति सुदेस मृदु हरत चिकुर मन मोहन-मुख बगराई ।
मानौ प्रगट कंज पर मंजुल अलि-अवली फिरि आई ।
नील, सेत, अरु पीत, लाल मनि लटकन भाल रुलाई[4] ।
सनि, गुरु-असुर, देवगुरु मिलि मनु भौम सहित समुदाई ।
दूध-दंत-दुति कहि[5] न जाति कछु अदभुत उपमा पाई ।
किलकत-हँसत दुरति प्रगटति मनु, घन मैं बिज्जु छटाई[6] ।
खंडित बचन देत पूरन सुख अलप-अलप जलपाई ।
घुटुरुनि चलत रेनु-तन-मंडित, सूरदास बलि जाई ॥ १०८ ॥ ७२६ ॥

राग नटनारायन

† हरि जू की बाल-छबि कहौं बरनि ।

सकल सुख की सींव, कोटि-मनोज-सोभा-हरनि ।
भुज भुजंग, सरोज नैननि, बदन बिधु जित लरनि ।
रहे बिवरनि, सलिल, नभ, उपमा अपर दुरि[7] डरनि ।

---

* (ना) बिहागरौ । (काँ, रा, श्या) नट ।

① छबि छाई—१, ११ । सुखदाई—२, ६, १६ । ② सुभग अति—१, ३, ६, ११, १५ । ③ नगनि—२, १६ । ④ रुनाई—१, ११ । डराई - ६, १७ । ⑤ देत अधिक छबि अद्भुत इह उपमाई—६, १७ । ⑥ छपाई—१ । लताई—२, ६, १७, १६ ।

† यह पद (ना, वृ, काँ, श्या) में नहीं है । यह भी गोस्वामीजी की गीतावली में 'रघुबर बाल-छबि कहौं बरनि' शीर्षक पद के रूप में मिलता है । बहुत थोड़ा अंतर, जो अनिवार्य था, पाया जाता है । (गीतावली ना० प्र० स०, पद २४)

⑦ दुति—१, ३, ६, ११, १४, १५, १७ ।

लै उठाइ अंचल गहि पोंछै, धूरि भरी सब देह।
सूरज प्रभु जसुमति रज झारति, कहाँ भरी यह खेह? ॥१११॥७२६॥

पाँवों चलना

* राग सूहौ बिलावल

धनि जसुमति बड़भागिनी, लिए कान्ह[1] खिलावै।
तनक-तनक भुज पकरि कै, ठाढ़ौ होन सिखावै।
लरखरात गिरि परत हैं, चलि घुटुरुनि धावैं।
पुनि क्रम-क्रम भुज टेकि कै, पग द्वैक चलावैं।
अपने पाइनि कबहिँ लौं, मोहिँ देखन धावै।
सूरदास जसुमति इहै बिधि सौं जु मनावै ॥११२॥७३०॥

* राग कान्हरौ

हरि कौ बिमल जस गावति गोपँगना।
मनिमय आँगन नंदराइ कौ, बाल गोपाल करैं तहँ रँगना।
गिरि-गिरि परत घुटुरुवनि रेँगत, खेलत हैं दोउ छगना-मगना।
धूसरि धूरि दुहूँ तन मंडित, मातु जसोदा लेति उछँगना।
बसुधा त्रिपद करत नहिँ आलस तिनहिँ कठिन भयौ देहरी उलँघना?
सूरदास प्रभु ब्रज-बधु निरखतिँ, रुचिर हार हिय सोहत बघना॥११३॥७३१॥

× राग सूहौ बिलावल

चलन[2] चहत पाइनि गोपाल।
लए लाइ अँगुरी नँदरानी, सुंदर[3] स्याम तमाल।
डगमगात गिरि परत पानि पर, भुज भ्राजत नँदलाल।

---

* (ना) आसावरी।
(१) गोद—२ १६, १८, १९।
* (ना) गुनकली।
× (ना, गो, कां, श्या) बिलावल। (के, क, पू) सूहौ। (रा) भैरव।
(२) चलन पैयाँ सिखवति गोपाल—२, १६, १८, १९। (३) मोहन—१, ३, ६, ११, १७।

लै उठाइ अंचल गहि पोंछै, धूरि भरी सब देह।
सूरज प्रभु जसुमति रज झारति, कहाँ भरी यह खेह? ॥ १११॥७२६॥

पाँवों चलना

* राग सूहौ बिलावल

धनि जसुमति बड़भागिनी, लिए कान्ह[1] खिलावै।
तनक-तनक भुज पकरि कै, ठाढ़ौ होन सिखावै।
लरखरात गिरि परत हैं, चलि घुटुरुनि धावैं।
पुनि क्रम-क्रम भुज टेकि कै, पग द्वैक चलावैं।
अपने पाइनि कबहिं लौं, मोहिं देखन धावै।
सूरदास जसुमति इहै बिधि सौं जु मनावै॥ ११२॥ ७३०॥

※ राग कान्हरौ

हरि कौ बिमल जस गावति गोपँगना।
मनिमय आँगन नंदराइ कौ, बाल गोपाल करैं तहँ रँगना।
गिरि-गिरि परत घुटुरुवनि रेँगत, खेलत हैं दोउ छगना-मगना।
धूसरि धूरि दुहूँ तन मंडित, मातु जसोदा लेति उछँगना।
बसुधा त्रिपद करत नहिं आलस तिनहिं कठिन भयौ देहरी उलँघना?
सूरदास प्रभु ब्रज-बधु निरखतिं, रुचिर हार हिय सोहत बघना॥ ११३॥७३१॥

× राग सूहौ बिलावल

चलन[2] चहत पाइनि गोपाल।
लए लाइ अँगुरी नँदरानी, सुंदर[3] स्याम तमाल।
डगमगात गिरि परत पानि पर, भुज भ्राजत नँदलाल।

---

* (ना) आसावरी।
① गोद—२ १६, १८, १९।
※ (ना) गुनकली।

× (ना, गो, कां, श्या) बिलावल। (के, क, पू) सूहौ। (रा) भैरव।

② चलन पैयाँ सिखवति गोपाल—२, १६, १८, १९। ③ मोहन—१, ३, ६, ११, १७।

सँग-सँग जसुमति-रोहिनी, हितकारिनि मैया ।
चुटकी देहिँ[1] नचावहीँ, सुत जानि नन्हैया ।
नील-पीत पट ओढ़नो[2] देखत जिय भावै ।
बाल-बिनोद अनंद सौँ, सूरज जन गावै ॥ ११६ ॥

॥७३४॥

* राग धनाश्री

† आँगन खेलैँ नंद के नंदा । जदुकुल-कुमुद-सुखद-चारु-चंदा ।
संग-संग बल-मोहन सोहैँ । सिसु-भूषन भुव[3] कौ मन मोहैँ ।
तन-दुति मोर-चंद जिमि झलकै । उमँगि-उमँगि अँग-अँग छबि छलकै ।
कटि किंकिनि, पग पैँजनि[4] बाजै । पंकज पानि पहुँचिया राजै ।
कठुला कंठ बघनहाँ नीके । नैन-सरोज मैन-सरसी के ।
लटकतिँ ललित ललाट लटूरी । दमकतिँ दूध[5] दतुरियाँ रूरी ।
मुनि-मन हरत मंजु मसि-बिंदा । ललित बदन बल-बालगुबिंदा ।
कुलही चित्र-बिचित्र झँगूली । निरखि जसोदा-रोहिनि फूली ।
गहि मनि-खंभ डिंभ[6] डग डोलैँ । कल-बल बचन तोतरे बोलैँ ।
निरखत झुकि, झाँकत प्रतिबिंबहिँ । देत परम सुख पितु अरु अंबहिँ ।
ब्रज-जन निरखत हिय हुलसाने । सूर स्याम-महिमा को जाने ॥११७

॥ ७३५ ।

---

(१) ददै—२ । (२) बपु बने—२ । पेहनी—१६, १६ ।

* (ना) गूजरी । (रा) बिलावल ।

† यह पद भी तुलसी-गीतावली में आया है । अंतर उतना है जितना कृष्ण-कथा को राम-कथा के रूप में परिणत कर देने के लिये अनिवार्य था । प्रथम द्वितीय और अंतिम पंक्तियों में ही कुछ परिवर्तन मिलता है, शेष प्रायः ज्यों की त्यों हैं ।

(३) सब—१, ११, १५ (४) नूपर—१, ६, ११, १५ । (५) द्वै द्वै—१, ११, १४ । दोय—२, १६ । द्वैक—३ । (६) देह—२, १६ ।

सँग-सँग जसुमति-रोहिनी, हितकारिनि मैया।
चुटकी देहिँ[1] नचावहीँ, सुत जानि नन्हैया।
नील-पीत पट ओढ़नो[2] देखत जिय भावै।
बाल-बिनोद अनंद सौँ, सूरज जन गावै॥ ११६॥

॥७३४॥

* राग धनाश्री

† आँगन खेलैँ नंद के नंदा। जदुकुल-कुमुद-सुखद-चारु-चंदा।
संग-संग बल-मोहन सोहैँ। सिसु-भूषन भुव[3] कौ मन मोहैँ।
तन-दुति मोर-चंद जिमि झलकै। उमँगि-उमँगि अँग-अँग छबि छलकै।
कटि किंकिनि, पग पैँजनि[4] बाजै। पंकज पानि पहुँचिया राजै।
कठुला कंठ बघनहाँ नीके। नैन-सरोज मैन-सरसी के।
लटकतिँ ललित ललाट लटूरी। दमकतिँ दूध[5] दतुरियाँ रूरी।
मुनि-मन हरत मंजु मसि-बिंदा। ललित बदन बल-बालगुबिंदा।
कुलही चित्र-बिचित्र झँगूली। निरखि जसोदा-रोहिनि फूली।
गहि मनि-खंभ डिंभ[6] डग डोलैँ। कल-बल बचन तोतरे बोलैँ।
निरखत झुकि, झाँकत प्रतिबिंबहिँ। देत परम सुख पितु अरु अंबहिँ।
ब्रज-जन निरखत हिय हुलसाने। सूर स्याम-महिमा को जाने॥ ११७॥

॥ ७३५ ॥

---

(१) ददै—२। (२) बपु बने—२। पेहनी—१६, १६।

* (ना) गूजरी। (रा) बिलावल।

† यह पद भी तुलसी-गीतावली में आया है। अंतर उतना है जितना कृष्ण-कथा को राम-कथा के रूप में परिणत कर देने के लिये अनिवार्य था। प्रथम द्वितीय और अंतिम पंक्तियों में ही कुछ परिवर्तन मिलता है, शेष प्राय: ज्यों की त्यों है।

(३) सब—१, ११, १५। (४) नूपर—१, ६, ११, १५। (५) द्वै द्वै—१, ११, १४। दोय—२, १६। द्वैक—३। (६) देह—२, १६।

राग सूहौ

† सूच्छम चरन चलावत बल करि ।
अटपटात, कर देति सुंदरी, उठत तबै[1] सुजतन तन-मन धरि ।
मृदु पद धरत धरनि ठहरात न, इत-उत भुज जुग लै-लै भरि-भरि ।
पुलकित सुमुखी भई स्याम-रस ज्यौं जल मैं काँची गागरि गरि ।
सूरदास सिसुता-सुख जलनिधि, कहँ लौं कहौं नाहिं कोउ समसरि ।
बिबुधनि[2] मन तर मान रमत ब्रज, निरखत जसुमति सुख छिन-पल-घरि ॥ १२० ॥
॥ ७३८ ॥

* राग बिलावल

बाल-बिनोद आँगन की[3] डोलनि ।
मनिमय भूमि नंद[4] कैं आलय, बलि-बलि जाउँ तोतरे बोलनि ।
कठुला कंठ कुटिल केहरि-नख, बज्र-माल बहु लाल अमोलनि ।
बदन सरोज तिलक गोरोचन, लट लटकनि मधुकर-गति डोलनि ।
कर[5] नवनीत परस आनन सौं, कछुक खात, कछु लग्यौ कपोलनि ।
कहि[6] जन सूर कहाँ लौं बरनौं, धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥ १२१ ॥ ७३९ ॥

⊛ राग बिलावल

गहे अँगुरिया ललन[7] की, नँद चलन सिखावत ।
अरबराइ गिरि परत हैं, कर टेकि उठावत ।

---

† यह पद केवल (ना स, ल में है ।

① जननि मुख इंदु मौन धरि—३ । ② विविधिन मन मानै क्रश्न सुमति के ब्रज छिन पल धरि—२ । विविवन मुनि नर मानि रमसि ब्रज जसुमति छिन घर—३ ।

* (ना) देवसाख ।

③ मधि—२, १८ । मैं—१७, १६ । ④ सुभग नँद आलय-१४ । ⑤ लौनी कर आनन परसत हैं कछुक खाइ—१, ११, १५ । ⑥ यह सुख सूर कहाँ लौं वरनौ धनि जसुमति—२, १६, १८, १६ ।

(ना) गौरी । (रा) धनाश्री ।

⑦ तात—१, ११, १५ । सुवन—३, १४, १७, १८, १६ ।

राग सूहौ

सूच्छम चरन चलावत बल करि ।
अटपटात, कर देति सुंदरी, उठत तबै[1] सुजतन तन-मन धरि ।
मृदु पद धरत धरनि ठहरात न, इत-उत भुज जुग लै-लै भरि-भरि ।
पुलकित सुमुखी भई स्याम-रस ज्यौं जल मैं काँची गागरि गरि ।
सूरदास सिसुता-सुख जलनिधि, कहँ लौं कहौं नाहिं कोउ समसरि ।
बिबुधनि[2] मन तर मान रमत ब्रज, निरखत जसुमति सुख छिन-पल-घरि ॥ १२० ॥
॥ ७३८ ॥

* राग बिलावल

बाल-बिनोद आँगन की[3] डोलनि ।
मनिमय भूमि नंद[4] कैं आलय, बलि-बलि जाउँ तोतरे बोलनि ।
कठुला कंठ कुटिल केहरि-नख, बज्र-माल बहु लाल अमोलनि ।
बदन सरोज तिलक गोरोचन, लट लटकनि मधुकर-गति डोलनि ।
कर[5] नवनीत परस आनन सौं, कछुक खात, कछु लग्यौ कपोलनि ।
कहि[6] जन सूर कहाँ लौं बरनौं, धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥ १२१ ॥ ७३९ ॥

⊛ राग बिलावल

गहे अँगुरिया ललन[7] की, नँद चलन सिखावत ।
अरबराइ गिरि परत हैं, कर टेकि उठावत ।

---

† यह पद केवल (ना स, ल में है ।

(१) जननि मुख इंदु मौन धरि—३ । (२) विविधिन मन मानै क्रस्न सुमति के ब्रज छिन पल धरि—२ । विविधन मुनि नर मानि रमसि ब्रज जसुमति छिन घर—३ ।

* (ना) देवसाख ।

(३) मधि—२, १८ । मैं—१७, १६ । (४) सुभग नँद आलय-१४ । (५) लौनी कर आनन परसत हैं कछुक खाइ—१, ११, १५ । (६) यह सुख सूर कहाँ लौं वरनौं धनि जसुमति—२, १६, १८, १६ ।

(ना) गौरी । (रा) धनाश्री ।

(७) तात—१, ११, १५ । सुवन—३, १४, १७, १८, १६ ।